

अस्माकम्

संस्कृत माला

कक्षा ७





अस्माकम् संस्कृतमाला

कक्षा ७

लेखक

डा. माधव भट्टराई

प्रकाशक

श्री ५ को सरकार

शिक्षा मन्त्रालय

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

सानो ठिमी, भक्तपुर, नेपाल ।

© सर्वाधिकार प्रकाशक र जनक शिक्षा
सामग्री केन्द्र लिमिटेडमा

संस्करणः पहिलोः २०५२ (परीक्षणका रूपमा)

दोस्रोः २०५३ (परिमार्जित रूपमा)

परिमार्जन

डा. सहदेव भट्ट
श्री कृष्ण अधिकारी
श्री गोपालप्रसाद भण्डारी
श्री सागरनाथ उप्रेती
प्रा. चेतोनाथ शर्मा आचार्य
श्री माधवशरण उपाध्याय
डा. भूपहरि पौडेल
श्री शम्भु दाहाल
श्री हरि गौतम
श्री ध्रुवप्रसाद गौतम
श्रीमती विजया ढङ्गाना
श्री गोपाल गुरागाई

चित्र सहयोगः

श्री रुद्रकृष्ण ताम्राकार

तपाईंले किनेको पुस्तकमा छपाइ प्रविधिसम्बन्धी कुनै त्रुटि फेला
परेमा अधिकृत वितरक साभा अथवा स्थानीय बिक्रेताबाट उक्त पुस्तक
सादन सक्नुहुनेछ ।

मूल्य रु.

मुद्रकः जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र लिमिटेड
सानो ठिमी, भक्तपुर ।

यस पुस्तकका सम्बन्धमा

परिवर्तित परिप्रेक्ष्य अनुसार शिक्षाका विविध पक्षहरूमा समयानुकूल संशोधन तथा परिवर्तनहरू गरिँदै छन् । विद्यार्थीहरूमा बहुदलीय प्रजातान्त्रिक मान्यता अनुरूपको उदात्त भावना प्रस्फुटन गराई राष्ट्रिय एकताको संवर्धन गर्दै सामाजिक सौजन्यलाई सुदृढ गराउने तथा देशनिर्माणका लागि आवश्यक हुने मानवीय साधनको विकास गर्ने एवं प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितिमा आफ्नो पहिचान कायम राखी सामञ्जस्यपूर्ण जीवनयापन गर्न सक्षम गराउने जस्ता शिक्षाका राष्ट्रिय उद्देश्य अनुसार विद्यालयस्तरका पाठ्यक्रम र पाठ्यपुस्तकहरूमा आवश्यक संशोधन, परिमार्जन तथा पुनरावलोकन गरी समयसापेक्ष र उद्देश्यानुकूल बनाउने कार्य अनुरूप यो पाठ्यपुस्तक प्रकाशन गरिएको छ ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक यस रूपमा आउनुभन्दा पहिले केही विद्यालयहरूमा परीक्षणका रूपमा लागू गरी सो क्रममा देखिएका कमीकमजोरीहरूलाई हटाई विभिन्न क्षेत्रबाट प्राप्त भएका सुझावहरूका आधारमा आवश्यक संशोधन एवं परिमार्जन समेत गरी राष्ट्रिय स्तरमा लागू गरिएको हो ।

पाठ्यपुस्तक सिकाइ प्रक्रियाको एउटा साधन मात्र हुँदा अनुभवी शिक्षकले पाठ्यक्रमद्वारा लक्षित विषयवस्तुलाई विविध स्रोतको सदुपयोग गरी सफलरूपले अध्यापन गर्न सक्तछन् तापनि सहजरूपमा हाम्रा विद्यालयहरूमा अन्य सहायक सामग्रीहरू उपलब्ध नहुँदा पाठ्यपुस्तकमाथि अत्यधिक निर्भर रहनुपरेको छ । यसैले प्रस्तुत पाठ्यपुस्तकलाई सकेसम्म स्तरयुक्त बनाई शिक्षक र विद्यार्थीहरूका आवश्यकतालाई अत्यधिक मात्रामा पूरा गर्न सकियोस भनी प्रयास गरिए तापनि भाषा, विषयक्रम, शैली जस्ता पाठ्यपुस्तकमा हुनपर्ने विविध पक्षमा अझै कमी/कमजोरीहरू हटाउन नसकिएका होलान्, तिनका सुधारका लागि शिक्षक, अभिभावक, विद्यार्थी तथा शिक्षाविद् लगायत सम्पूर्ण पाठकहरूको सक्रिय सहयोगको महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा सम्बद्ध सबैका रचनात्मक सुझावका लागि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र सदैव स्वागत गर्दछ ।

श्री ५ को सरकार

शिक्षा मन्त्रालय

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

सानो ठिमी, भक्तपुर ।

THE HISTORY OF THE

REIGN OF KING CHARLES THE FIRST
IN WHICH ARE CONTAINED
THE MOST IMPORTANT AND INTERESTING
PARTS OF HIS REIGN, FROM HIS
ACCESSION TO THE THRONE, TO HIS
DEATH, AND THE CONSEQUENT
CHANGE OF GOVERNMENT.

BY
JOHN BURNET, ESQ.
OF LINCOLN'S INN, ESQ.
OF THE BARR, ESQ.
OF THE BARR, ESQ.

LONDON:
Printed by J. BARNARD, at the
Sign of the Sun, in St. Paul's Church-Yard,
1724.

IN TWO VOLUMES.
THE FIRST VOLUME.

THE SECOND VOLUME.

THE THIRD VOLUME.

THE FOURTH VOLUME.

THE FIFTH VOLUME.

विषयसूची

१.	प्रार्थना	१
२.	प्रथमः पाठः शब्दज्ञानम्	२
३.	द्वितीयः पाठः शब्दज्ञानम्	६
४.	तृतीयः पाठः शब्दज्ञानम्	९
५.	चतुर्थः पाठः सरल-वाक्य-रचना	१३
६.	पञ्चमः पाठः सरल-वाक्य-रचना	१७
७.	षष्ठः पाठः सरल-वाक्य-रचना	२१
८.	सप्तमः पाठः वाक्यरचना	२५
९.	अष्टमः पाठः वाक्यरचना	२९
१०.	नवमः पाठः ईशस्तुतिः	३४
११.	दशमः पाठः अनुशासन-शिक्षा	३८
१२.	एकादशः पाठः त्याज्यो दुर्जनसंसर्गः (कथा)	४१
१३.	द्वादशः पाठः समाजसुधारकः शुक्रराजः (जीवनी)	४६
१४.	त्रयोदशः पाठः स्वच्छम् जलम् (संवादः)	५०
१५.	चतुर्दशः पाठः मकरसङ्क्रान्तिः (प्रबन्धः)	५४
१६.	पञ्चदशः पाठः हास्यपद्यम् (पद्यम्)	५८
१७.	षोडशः पाठः न मूर्खो हितकारकः (कथा)	६२
१८.	सप्तदशः पाठः उद्यानम् गच्छावः (संवादः)	६६
१९.	अष्टादशः पाठः नीतिपद्यानि	७०
२०.	ऊनविंशः पाठः नेपालस्य एकीकरणम् (प्रबन्धः)	७५
२१.	विंशः पाठः भरतस्य वीरता (कथा)	७९
२२.	एकविंशः पाठः विद्याप्रशंसा (पद्यानि)	८३
२३.	द्वाविंशः पाठः सङ्ख्या	८८
२४.	शब्द-भण्डारः	९१

INDEX

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

प्रार्थना



असतो मा सद् गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥

(हे ईश्वर ।) मलाई असत्यबाट सत्यतिर लैजाऊ ।
मलाई अँध्यारोबाट उज्यालोतर्फ लैजाऊ ।
मलाई मृत्युबाट अमृत (अमरता) तर्फ लैजाऊ ॥

शब्दार्थः

मा	= मलाई	तमसः	= तम (अँध्यारो, अज्ञान) बाट
असतः	= असत्यबाट	ज्योतिः	= प्रकाश, उज्यालो, ज्ञान (तर्फ)
सत्	= सत्य (तर्फ)	मृत्योः	= मृत्युबाट
गमय	= लैजाऊ, पुऱ्याऊ	अमृतम्	= अमरता, अमृत (तर्फ)

प्रथमः पाठः

शब्दज्ञानम्

देवः	शिक्षकः	हिमालयः	अजः
बुद्धः	छात्रः	निर्भरः	मेषः



अयम् देवः



अयम् बुद्धः



अयम् शिक्षकः



अयम् छात्रः



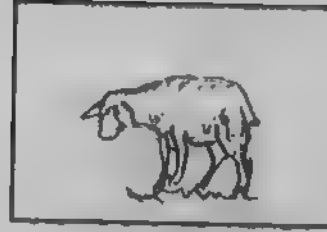
अयम् हिमालयः



अयम् निर्भरः



अयम् अजः



अयम् मेषः

शब्दार्थाः

अयम्	=	यो, यी
अजः	=	बोको
मेषः	=	भेडो
निर्भरः	=	भर्ना
देवः	=	देवता

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

हिमालयः, बुद्धः, निर्भरः, शिक्षकः ।

२. शुद्धम् कृत्वा लिखत

शिक्षकः, देवः, हिमालयः, मेषः ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

अयम्, अजः, मेषः, निर्भरः ।

४. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) नि रः (भर्, र्भ, र)	(ख) मालयः (क, म, हि)
(ग), क्षकः (र, शि, म)	(घ) अय (म्, न्, त)

५. परस्परम् मेलयत

(क) बुद्धः	(क) छात्रः
(ख) हिमालयः	(ख) मेषः
(ग) अजः	(ग) देवः
(घ) शिक्षकः	(घ) निर्भरः

६. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

(क) यी देवता ।

(ख) यो विद्यार्थी ।

(ग) यो बोको ।

(घ) यो हिमालय ।

७. चित्रम् अवलोक्य शब्दम् लिखत



(क) अयम् मेषः ।



(ख) ।



(ग) ।



(घ) ।

विशेष अभ्यास

यस पाठमा अकारान्त पुलिङ्ग शब्दको प्रयोग भएको छ । यस्तै अन्य शब्दको पनि अभ्यास गराउनु बढी लाभदायक हुन्छ । जस्तै- शिवः, सूर्यः, मयूरः, गजः, चन्द्रः, शुकः, काकः, विडालः, सिंहः, धर्मः, करः, चरणः, भुजः, जनकः, दीपः, बकः, कपोतः, घोटकः, मञ्चः, खगः आदि ।

(क) अयम् कपोतः ।

(ख) खगः ।

(ग) अयम् शिवः ।

(घ) अयम् ।

(ङ) ।

(च) ।

(छ) ।

द्वितीयः पाठः

शब्दज्ञानम्

दुर्गा	जननी	लता	पाठशाला
सरस्वती	कन्या	पताका	बाटिका



इयम् दुर्गा



इयम् सरस्वती



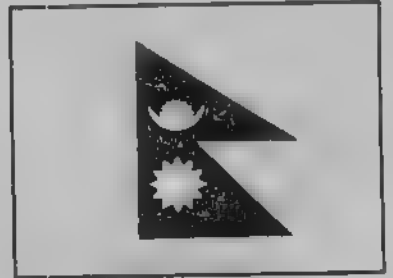
इयम् जननी



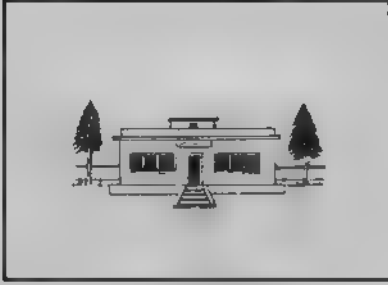
इयम् कन्या



इयम् लता



इयम् पताका



इयम् पाठशाला



इयम् वाटिका

शब्दार्थः

इयम् = यो, यी

पताका = झन्डा

लता = लहरो

जननी = आमा

वाटिका = फूलबारी, बगैँचा

कन्या = केटी

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

दुर्गा, जननी, सरस्वती, कन्या ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् लिखत

पाठशाला, जननी, सरस्वती ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

इयम्, जननी, लता, पताका ।

४. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) मेषः । (अयम्, इयम्)

(ख) इयम् । (वाटिका, हिमालयः)

(ग) जननी । (अयम्, इयम्)

(घ) इयम् । (देवः, दुर्गा)

५. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

(क) यो झन्डा ।

(ख) यो झर्ना ।

(ग) यो पाठशाला ।

(घ) यो फूलबारी ।

विशेष अभ्यास

यस पाठमा आकारान्त र ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दको प्रयोग गरिएको छ ।
कक्षामा अभ्यासका निम्ति यस्ता अरू शब्द पनि प्रयोगमा ल्याउनु आवश्यक छ ।
जस्तै-

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

मक्षिका, पिपीलिका, पुस्तिका, नासिका,
घटिका, शिला, शिक्षिका, परिचारिका,
वीणा, इच्छा, पूजा, शाखा, बालिका,
श्रद्धा, तालिका, कविता, योजना, परीक्षा,
मध्यमा, कनिष्ठिका, अनामिका, जङ्घा,
रसना ।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लेखनी, मसी, तुलसी, तर्जनी,
पञ्चमी, भवानी, पार्वती, नारी,
देवी, नगरी, महिषी, विदुषी आदि ।

तृतीयः पाठः

शब्दज्ञानम्

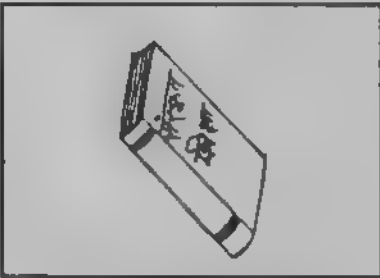
मानचित्रम्	मन्दिरम्	पुस्तकम्	पुष्पम्
निवेदनपत्रम्	गृहम्	छत्रम्	फलम्



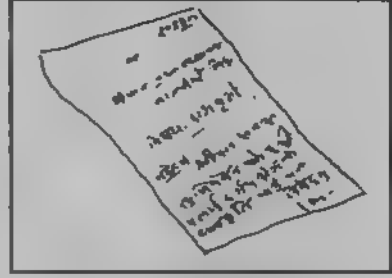
इदम् मन्दिरम् ।



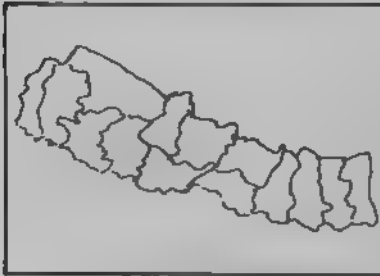
इदम् गृहम् ।



इदम् पुस्तकम् ।



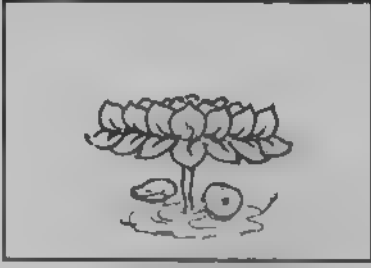
इदम् निवेदनपत्रम् ।



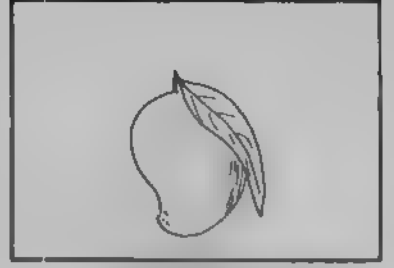
इदम् मानचित्रम् ।



इदम् छत्रम् ।



इदम् पुष्पम्



इदम् फलम् ।

शब्दार्थाः

मानचित्रम्	= नक्सा	निवेदनपत्रम्	= निवेदन पत्र
छात्रम्	= छाता	पुष्पम्	= फूल
गृहम्	= घर		

अभ्यासः

१. शुद्धम् कृत्वा लिखत

मन्दीरम्, पुष्पम्, पुस्तकम् ।

२. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

गृहम्, छात्रम्, फलम्, मानचित्रम् ।

३. रिक्तस्थानम् पूरयत

- (क) पुष्पम् । (इदम्, अयम्, इयम्)
 (ख) इदम् । (देवः, कन्या, पुस्तकम्)
 (ग) वाटिका । (इदम्, इयम्, अयम्)
 (घ) इयम् । (छात्रम्, लता, छात्रः)

४. परस्परम् मेलयत

- | | |
|------------|-------------|
| (क) इदम् | (क) छात्रः |
| (ख) अयम् | (ख) बाटिका |
| (ग) द्वयम् | (ग) पुष्पम् |

५. नेपालीभाषायाम् अनुवाचम् कुरुत

- | | |
|---------------------|-------------------------|
| (क) इदम् मन्दिरम् । | (ख) इदम् निवेदनपत्रम् । |
| (ग) इदम् छात्रम् । | (घ) इदम् गृहम् । |
| (ङ) द्वयम् जननी । | (च) इदम् पुष्पम् । |

विशेष अभ्यास

१. पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसकलिङ्ग जनाउन क्रमशः अयम्, इयम्, र इदम्को प्रयोग गरिन्छ । नजिकको वस्तु निर्देशन गर्ने यी शब्द इदम् शब्दका प्रथमा विभक्तिका एक वचनका रूप हुन् । जुन लिङ्गको नाम शब्द छ, सोही अनुसार यिनको प्रयोग गरिन्छ भन्ने पाठबाट थाहा हुन्छ । जस्तै- पुलिङ्गमा अयम् रामः, अयम् शिक्षकः, स्त्रीलिङ्गमा इयम् देवी, इयम् लता, नपुंसक लिङ्गमा इवम् पुष्पम्, इदम् गृहम् इत्यादि ।
२. यस पाठमा अकारान्त नपुंसक लिङ्गी शब्दको प्रयोग भएको छ । यस्तै अरू शब्दको पनि कक्षामा अभ्यास गराउन सकिन्छ । जस्तै:- मुखम्, उपनेत्रम्, शरीरम्, जलम्, दुग्धम्, वस्त्रम्, चित्रम्, तिलम्, मूलम्, शिखरम्, पत्रम्, फलम्, उदरम्, धनम्, बलम् इत्यादि ।

चतुर्थः पाठः

सरल-वाक्य-रचना

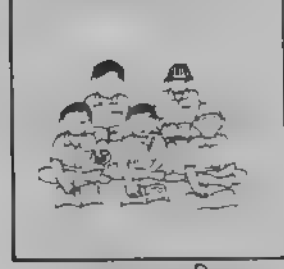
छात्रः	छात्रौ	छात्राः	पठति	पठतः	पठन्ति
बालिका	बालिके	बालिकाः	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि	विकसति	विकसतः	विकसन्ति



छात्रः पठति ।



छात्रौ पठतः ।



छात्राः पठन्ति ।



बालिका खेलति ।



बालिके खेलतः ।



बालिकाः खेलन्ति ।



पुष्पम् विकसति ।



पुष्पे विकसतः ।



पुष्पाणि विकसन्ति ।

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

बालिकाः, पुष्पाणि, खेलन्ति, पठन्ति, पठतः, विकसतः ।

२. शुद्धम् लिखत

पठन्ति, बालिकाः, पुष्पाणि, विकसन्ति, खेलतः, पुष्पे ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

(क) छात्राः पठन्ति । (ख) पुष्पे विकसतः ।

(ग) रामः गच्छति । (घ) बालिके खेलतः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) छात्रः किम् करोति ? (उदाहरणम्- छात्रः पठति)

(ख) किम् विकसति ?

(ग) बालिका किम् करोति ?

(घ) के पठन्ति ?

(ङ) के खेलतः ?

५. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) छात्रः । (पठति, विकसति, गर्जति)

(ख) खेलति । (बालिका, मक्षिका, पुष्पम्)

(ग) पुष्पाणि । (गच्छन्ति, विकसन्ति, भवन्ति)

(घ) बालिकाः । (खेलन्ति, विकसन्ति, चलन्ति)

(ङ) पुष्पे । (विकसति, विकसतः, विकसन्ति)

(च) छात्रौ । (पठति, पठतः, पठन्ति)

६. परस्परम् मेलयत

- | | |
|--------------|----------------|
| (क) छात्रौ | (क) विकसन्ति । |
| (ख) पुष्पाणि | (ख) खेलतः । |
| (ग) बालिके | (ग) पठति । |
| (घ) छात्रः | (घ) पठतः । |

७. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

- (क) राम जान्छ ।
(ख) तिमी के गछौ ?
(ग) हामी पढ्छौ ।
(घ) फूल फुल्छ ।
(ङ) दुइटा केटाहरू खेल्छन् ।

विशेष अभ्यास

१. यस पाठमा अकारान्त, आकारान्त पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुसक लिङ्ग शब्दको एकवचन, द्विवचन र बहुवचनका नमूना देखाइएको छ । प्रथम पुरुष कर्ताको प्रयोग गरी क्रियापदमा वर्तमान काल, लट् लकारको प्रयोग गरिएको छ ।
२. अभ्यास गराउँदा पाठमा दिएजस्तै अन्य सरल वाक्यको प्रयोग गर्नु उपयोगी हुन्छ । जस्तै- पुलिङ्गमा बालकः पठति, बालकौ पठतः बालकाः पठन्ति, नरः गच्छति, नराः गच्छन्ति, स्त्रीलिङ्गमा छात्रा खेलति, छात्रे खेलतः छात्राः खेलन्ति, माला अस्ति, माले स्तः मालाः सन्ति । नपुसक लिङ्गमा कमलम् विकसति, कमलानि विकसन्ति, पत्रम् पतति, पत्रे पततः, पत्राणि पतन्ति इत्यादि ।
३. वाक्य रचनाका निम्ति शब्दका विभिन्न वचन र विभक्तिका रूप जान्नुपर्ने हुन्छ ।

यस क्रममा यहाँ अकारान्त पुलिङ्ग शब्द छात्रको रूप-तालिका देखाइएको छ-

विभक्ति	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	छात्रः	छात्रौ	छात्राः
द्वितीया	छात्रम्	छात्रौ	छात्रान्
तृतीया	छात्रेण	छात्राभ्याम्	छात्रैः
चतुर्थी	छात्राय	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
पञ्चमी	छात्रात्-द्	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
षष्ठी	छात्रस्य	छात्रयोः	छात्राणाम्
सप्तमी	छात्रे	छात्रयोः	छात्रेषु
सम्बोधन	हे छात्र !	हे छात्रौ !!	हे छात्राः !!!

यसैगरी राम, देव, अज, गज, सिंह, बकः, घोटकः, काकः, कपोतः आदि शब्दका रूप चल्छन् ।

४. यस्तै क्रियापदका पनि तीनै वचन तथा तीनै पुरुषमा रूप चल्दछन् ।

पठ्- धातुका लट् लकारका रूपहरू तल दिइएको छ-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यमपुरुष	पठसि	पठतः	पठथ
उत्तमपुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

यसैगरी खेल, त्यज्, नम्, धाव्, खन्, प्र+विश्, वि+कस् आदि धातुका रूप चल्छन् ।

पञ्चमः पाठः

सरल-वाक्य-रचना

त्वम्	पठसि	लिखसि	गच्छसि
युवाम्	पठथः	लिखथः	गच्छथः
यूयम्	पठथ	लिखथ	गच्छथ



त्वम् पठसि ।



युवाम् पठथः ।



यूयम् पठथ ।



त्वम् लिखसि ।



युवाम् लिखथः ।



यूयम् लिखथ ।



त्वम् खेलसि ।



युवाम् खेलथः ।



यूयम् खेलथ ।



त्वम् गच्छसि ।



युवाम् गच्छथः ।



यूयम् गच्छथ ।

शब्दार्थाः

त्वम्	= तौ, तिमी
युवाम्	= तिमी दुई
यूयम्	= तिमीहरू
पठसि	= पढ्छौ, पढ्छस्
लिखसि	= लेख्छस्, लेख्छौ
वदसि	= भन्छस्, भन्छौ
वदथ	= भन्छौ ।

खेलसि	= खेल्छस्, खेल्छौ
गच्छसि	= जान्छस्, जान्छौ
खेलथः	= (तिमी दुई) खेल्छौ
गच्छथः	= (तिमी दुई) जान्छौ
खेलथ	= खेल्छौ
गच्छथ	= जान्छौ

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

(क) त्वम् लिखसि ।

(ग) यूयम् पठथ ।

(ङ) युवाम् गच्छथः

(ख) बालिका खेलति ।

(घ) त्वम् गच्छसि ।

(च) युवाम् खेलथः

२. शुद्धम् लिखत

(क) त्वम् लिखसि ।

(ग) यूयम् पठथ ।

(ङ) युवाम् लिखथः ।

(ख) त्वम् गच्छसि ।

(घ) बालिकाः पठन्ति ।

(च) युवाम् गच्छथः

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

त्वम्, पठसि, यूयम्, पुष्पम्, युवाम्, लिखथः, गच्छथ ।

४. रिक्तस्थानम् पूरयत

- (क) त्वम् । (पठति, पठसि, पठामि)
(ख) लिखथ । (यूयम्, त्वम्, अहम्)
(ग) गच्छति । (अहम्, रामः, त्वम्)
(घ) यूयम् । (खेलसि, खेलथः, खेलथ)
(ङ) युवाम् । (गच्छसि, गच्छथः, गच्छथ)

५. परस्परम् मेलयत

- | | |
|--------------|--------------|
| (क) त्वम् | (क) विकसन्ति |
| (ख) युवाम् | (ख) पठति |
| (ग) यूयम् | (ग) लिखथ |
| (घ) छात्रः | (घ) खेलसि |
| (ङ) पुष्पाणि | (ङ) हसथः |

६. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

- (क) तौ पदच्छत् ।
(ख) तिमी खेल्यौ ।
(ग) राम जान्छ ।
(घ) तिमीहरू लेख्यौ ।
(ङ) फूल फुल्य ।
(च) तिमी दुई लेख्यौ ।
(छ) तिमी दुई खेल्यौ ।

विशेष अभ्यास

१. संस्कृतमा तीन पुरुष छन्- प्रथम, मध्यम र उत्तम पुरुष । जसका बारे कुरा गरिन्छ, त्यस्तामा प्रथम पुरुष हुन्छ । सुरेशः, रमा आदि नाम शब्द वा तद्, एतद्, इदम् आदि सर्वनाम शब्द प्रथम पुरुषको क्रियापदसँग कर्ताको रूपमा प्रयोग हुन्छन् । जस्तै- रमेशः गच्छति । रमा पठति । सः लिखति ।
२. संस्कृतमा मध्यम पुरुषका लागि युष्मद् शब्दको प्रयोग हुन्छ । युष्मद् शब्द (त्वाम् एकवचन, युवाम्-द्विवचन र यूयम्-बहुवचन) ले मध्यम पुरुषमा कर्ताको काम गर्दछन् । जस्तै-

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
त्वम् पठसि ।	युवाम् पठतः	यूयम् पठथ ।
त्वम् लिखसि ।	युवाम् लिखथः	यूयम् लिखथ ।
त्वम् गच्छसि ।	युवाम् गच्छथः	यूयम् गच्छथ ।
त्वम् वदसि ।	युवाम् वदथः	यूयम् वदथ ।

३. शब्दरूपको अभ्यासका क्रममा यहाँ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग रमा शब्दको रूपावली दिइएको छ-

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे	हे रमे	हे रमाः

यसै गरी लता, माला, बालिका, वाटिका, पुस्तिका, छात्रा, विद्या, शिला आदि शब्दका रूप चल्दछन् ।

षष्ठः पाठः

सरल-वाक्य-रचना

अहम् पठामि/लिखामि/खेलामि/हसामि

आवाम् पठावः/लिखावः/खेलावः/हसावः

वयम् पठामः/लिखामः/खेलामः/हसामः



अहम् पठामि ।



आवाम् पठावः ।



वयम् पठामः ।



अहम् लिखामि ।



आवाम् लिखावः ।



वयम् लिखामः ।



अहम् खेलामि ।



आवाम् खेलावः ।



वयम् खेलामः ।



अहम् हसामि ।



आवाम् हसावः ।



वयम् हसामः ।

शब्दार्थाः

अहम्	= म	हसामि	= हाँस्खु
आवाम्	= हामी दुई	हसामः	= हाँस्छौँ
वयम्	= हामीहरू	धावामि	= दौडन्छु
पठामि	= पढ्छु ।	धावामः	= दौडन्छौँ
पठामः	= पढ्छौँ	खनामि	= खन्छु
लिखामि	= लेख्छु	खनामः	= खन्छौँ
लिखावः	= (हामी दुई) लेख्छौँ	रक्षामि	= रक्षा गर्छु
लिखामः	= लेख्छौँ	रक्षामः	= रक्षा गर्छौँ
खेलामि	= खेल्छु	पश्यामः	= हेर्छौँ
खेलावः	= (हामी दुई) खेल्छौँ	पश्यामि	= हेर्छु
खेलामः	= खेल्छौँ		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

अहम् लिखामि । वयम् पठामः । त्वम् गच्छसि । यूयम् खेलथ । आवाम् खेलावः ।

२. शुद्धम् कृत्वा लिखत

- | | | |
|-------------------|------------------|--------------------|
| (क) त्वम् पठति । | (ख) वयम् लिखाम । | (ग) आवाम् गच्छथः । |
| (घ) अहम् खेलामी । | (ङ) अहम् हससि । | (च) आवाम् खेलति । |

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

यूयम्, अहम्, लिखामि, हसामः, आवाम्, वयम्, हसावः ।

४. अधो लिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

त्वम्, आवाम्, वयम्, हसामः, खेलसि, रमा, पठति, पठावः । (यथा- त्वम् खेलसि ।)

५. शुद्धस्थले (✓) चिह्नम् अशुद्धस्थले (X) चिह्नम् दत्त

(क) अहम् पठामि । ()

(ख) वयम् लिखामि । ()

(ग) अयम् गच्छसि । ()

(घ) त्वम् हससि । ()

(ङ) आवाम् गच्छावः । ()

(च) युवाम् गच्छसि । ()

६. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) अहम् हसामि । (ख) अहम् खेलामि । (ग) आवाम् खेलावः ।

(घ) वयम् पठामः । (ङ) यूयम् गच्छथ । (च) आवाम् लिखावः ।

विशेष अभ्यास

१. आफूलाई जनाउँदा उत्तम पुरुष हुन्छ । अस्मद् शब्द अहम्-एकवचन, आवाम्-द्विवचन र वयम्-बहुवचनको उत्तम पुरुषमा कर्ताको रूपमा प्रयोग गरिन्छ । यस पाठमा एक वचनमा अहम् पठामि, अहम् लिखामि, अहम् खेलामि द्विवचनमा आवाम् पठावः, आवाम् लिखावः, आवाम् खेलावः र बहुवचनमा, वयम् पठामः वयम् लिखामः, वयम् खेलामः जस्ता वाक्य उत्तम पुरुषमा प्रयुक्त छन् । यस्तै- अन्य वाक्यको पनि अभ्यास गराउन सकिन्छ । जस्तै:-

एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
अहम् धावामि ।	आवाम् धावावः ।	वयम् धावामः ।
अहम् खनामि ।	आवाम् खनावः ।	वयम् खनामः ।
अहम् पश्यामि ।	आवाम् पश्यावः ।	वयम् पश्यामः ।

सप्तमः पाठः

वाक्य-रचना



छात्रः संस्कृतम् पठति ।



छात्रौ संस्कृतम् पठतः ।



छात्राः संस्कृतम् पठन्ति ।



नरः ओदनम् पचति ।



नरौ ओदनम् पचतः ।



नराः ओदनम् पचन्ति ।



त्वम् पत्रम् लिखसि ।



युवाम् पत्रम् लिखथः ।

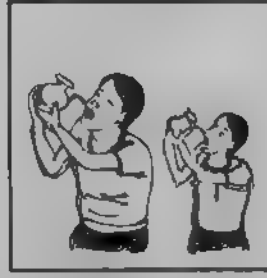


यूयम् पत्रम् लिखथ ।



त्वम् पुष्पम् पश्यसि । युवाम् पुष्पम् पश्यथः ।

यूयम् पुष्पम् पश्यथ ।



अहम् जलम् पिबामि । आवाम् जलम् पिबावः ।

वयम् जलम् पिबामः ।



अहम् फलम् खादामि । आवाम् फलम् खादावः । वयम् फलम् खादामः ।

शब्दार्थाः

ओदनम् = भात
पत्रम् = चिठी
नरः = मान्छे
पचिति = पकाउँछे, पकाउँछे
पचन्ति = पकाउँछन्

पश्यसि = हेर्छस्, हेर्छौं
पश्यथ = हेर्छौं
पिबामि = पिउँछु
पिबामः = पिउँछौं
खादामि = खान्छु

नरौ = दुईवटा मान्छे
छात्रौ = दुई विद्यार्थी
पिबावः = (हामी दुई) पिउँछौं

खादामः = खान्छौं
पश्यथः = (दुईजना हेछौं)

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

सस्कृतम्, पश्यथ, पठन्ति, यूयम्, आवाम् ।

२. शुद्धम् कृत्वा लिखत

(क) नरा ओदनम् पचन्ति । (ख) यूयम् पश्यथ ।
(ग) छात्रः सस्कृतम् पठन्ति । (घ) वयम् फलम् खादामि ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

ओदनम्, पुष्पम्, पचति, छत्रम् ।

४. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) छात्रः पठति । (सस्कृतम्, पुष्पम्, ओदनम्)
(ख) नराः ओदनम् । (पठन्ति, खेलन्ति, पचन्ति)
(ग) वयम् पिबाम । (पुष्पम्, जलम्, फलम्)
(घ) त्वम् पुष्पम् । (लिखसि, हससि, पश्यसि)
(ङ) छात्रौ पत्रम् । (लिखतः, लिखथः, लिखावः)

५. तालिकायाः शब्दम् गृहीत्वा वाक्यानि रचयत

अहम्	पठामि, पठामः	यथा-अहम् पठामि
वयम्	हसामि, हसामः	
छात्रौ	खेलामि, खेलामः	
	खेलतः, पठतः	

६. उदाहरणम् अनुसृत्य रूपाणि लिखत

शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
छात्र	छात्रः	छात्रौ	छात्राः
नर	नरः	नरौ	...
बुद्ध	बुद्धः		
अज	...		
मेघ			

विशेष अभ्यास

कर्ता र कर्म कारक

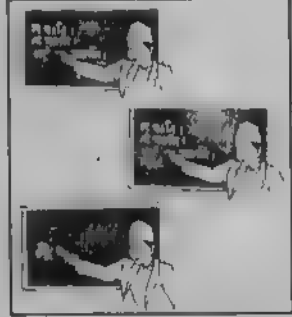
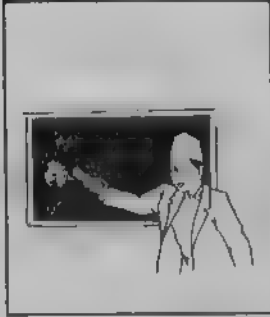
१. वाक्यमा विभिन्न कारकको प्रयोग हुन्छ, जस्तै: छात्रः पठति यस वाक्यमा छात्रः कर्ता कारक र पठति क्रिया पद हो । छात्रः संस्कृतम् पठति यस वाक्यमा छात्रः कर्ता कारक र संस्कृतम् कर्म (कारक) हो भने पठति क्रिया हो ।
२. माथिका उदाहरणबाट के प्रस्ट हुन्छ-भने वाक्यमा कार्य सम्पन्न गर्ने कर्ता हुन्छ र कर्ताले अत्यन्तै चाहेको (वस्तु वा व्याक्ति) कर्म हुन्छ । कर्तामा प्रथमा विभक्ति र कर्ममा द्वितीया विभक्ति हुन्छ ।

कर्ता, कर्म र क्रियाको नमुना अभ्यासका निम्ति यसरी देखाउन सकिन्छ-

कर्ता	कर्म	क्रिया	वचन पुरुष
जनः	पूजाम्	करोति	एकवचन प्रथम पुरुष
जनौ	पूजाम्	कुरुतः	द्विवचन प्रथम पुरुष
जनाः	पूजाम्	कुर्वन्ति	ब. व. प्रथम पुरुष
नरः	ओदनम्	पचति	ए. व. / प्र. पु.
नरौ	ओदनम्	पचतः	द्विवचन / प्र. पु.
नराः	ओदनम्	पचन्ति	ब. व. / प्र. पु.
एवम्	पत्रम्	लिखति	एक वचन मध्यम पुरुष
एवाम्	पत्रम्	लिखथः	द्विवचन मध्यम पुरुष
एषम्	पत्रम्	लिखथ	ब. व. मध्यम पुरुष
तम्	पुष्पम्	पश्यति	ए. व. मध्यमपुरुष
तुवाम्	पुष्पम्	पश्यथः	द्विवचन मध्यम पुरुष
युयम्	पुष्पम्	पश्यथ	ब. व. मध्यम पुरुष
अहम्	जलम्	पिबामि	ए. व. उत्तम पुरुष
आवाम्	जलम्	पिबावः	द्विवचन उत्तम पुरुष
वयम्	जलम्	पिबामः	ब. व. उत्तम पुरुष
अहम्	फलम्	खादामि	ए. व. उत्तम पुरुष
आवाम्	फलम्	खादावः	द्विवचन उत्तम पुरुष
वयम्	फलम्	खादामः	ब. व. / उत्तम पुरुष

अष्टमः पाठः

वाक्य-रचना



शिक्षकः लेखन्या लिखति । शिक्षकौ लेखन्या लिखतः । शिक्षकाः लेखन्या लिखन्ति ।



छात्रः कन्दुकेन खेलति । छात्रौ कन्दुकेन खेलतः । छात्राः कन्दुकेन खेलन्ति ।



त्वम् पादाभ्याम् गच्छसि । युवाम् पादाभ्याम् गच्छथ । यूयम् पादाभ्याम् गच्छथ ।



त्वम् मुखेन खादसि ।



युवाम् मुखेन खादथ ।



यूयम् मुखेन खादथ ।



अहम् नेत्राभ्याम् पश्यामि ।



आवाम् नेत्राभ्याम् पश्यावः ।



वयम् नेत्राभ्याम् पश्यामः ।



अहम् शिरसा नमामि ।



आवाम् शिरसा नमावः ।



वयम् शिरसा नमामः ।

शब्दार्थः

लेखन्या	= कलमले	शिरसा	= शिरले
पादाभ्याम्	= दुई गोडाले	नमामि	= ढोग्दछु
मुखेन	= मुखले	नमामः	= ढोग्दछौ
नेत्राभ्याम्	= दुई आँखाले	करोमि	= गर्छु
नमावः	= (हामी दुई) ढोग्दछौ	कुर्वन्ति	= गर्दछन्
गच्छामः	= जान्छौ		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

पादाभ्याम्, लेखन्या, गच्छसि, पश्यामः, नमावः ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत ।

शिरसा, पश्यामि, नमामः, लिखन्ति, लिखतः, लिखावः ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

त्वम्, लेखन्या, नमामि, पादाभ्याम्, मुखेन ।

४. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) शिक्षकः लिखति । (कन्दुकेन, शिरसा, लेखन्या)

(ख) अहम् शिरसा । (नमामि, पश्यामि, खेलामि)

(ग) यूयम् गच्छथ । (लेखन्या, नेत्राभ्याम्, पादाभ्याम्)

(घ) नेत्राभ्याम् पश्यामः । (यूयम्, वयम्, अहम्)

(ङ) आवाम् (पश्यथः, पश्यतः, पश्यावः)

(च) लिखावः (अहम्, आवाम्, वयम्)

५. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

अजः त्वम्, वयम्, गच्छति, नमामः, पठसि, आवाम्, युवाम् ।

(यथा- अजः गच्छति ।)

६. उदाहरणम् अनुसृत्य रूपाणि लिखत

धातुः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
लिख्	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
खेल्
हस्
खाद्

७. संस्कृते उत्तरयत

- (क) शिक्षकः किम् करोति ? (शिक्षकः लिखति)
 (ख) छात्राः किम् कुर्वन्ति ?
 (ग) अहम् किम् करोमि ?
 (घ) यूयम् किम् कुरुथ ?

८. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

- (क) त्वम् खादसि । (ख) सः पठति ।
 (ग) अहम् पत्रम् लिखामि । (घ) वयम् पादाभ्याम् गच्छामः ।
 (ङ) युवाम् खादथः । (च) तौ धावतः ।

विशेष अभ्यास

तृतीया विभक्ति र करण कारक

१. यस पाठमा तृतीया विभक्ति र करण कारकको प्रयोग गरिएको छ । त्वम् पादाभ्याम् गच्छसि यस वाक्यमा त्वम् कर्ता र गच्छसि क्रिया हुन् भने पादाभ्याम् तृतीया विभक्ति र करण कारकको रूप हो । यस्तै अहम् नेत्राभ्याम् पश्यामि, त्वम् मुखेन खादसि, वयम् शिरसा नमामः यी वाक्यमा अहम्, त्वम्, वयम् कर्ता कारक र पश्यामि, खादसि, नमामः क्रियापद हुन् । वाक्यका बीचमा रहेका नेत्राभ्याम्, मुखेन, शिरसा यी पदचाहिँ करण कारक हुन् ।
२. उदाहरणबाट के प्रस्ट हुन्छ भने जसका कारणले वा माध्यमले काम हुन्छ, त्यो करण हुन्छ । अर्को शब्दमा भन्ने हो भने कर्ताले काम सिद्ध गर्न प्रयोग नगरी नहुने साधन नै करण हुन्छ । करणमा तृतीया विभक्ति हुन्छ । जस्तै "शिक्षकः लेखन्या लिखति" यस वाक्यमा कर्ता शिक्षकका लागि लेखन कार्यका निमित्त अत्यन्तै आवश्यक पर्ने साधन लेखनी (कलम) करण भएकाले लेखनी शब्दमा तृतीया विभक्ति भएको छ ।

३. अभ्यासका निम्ति यहाँ अकारान्त नपुंसक लिङ्ग नेत्र शब्दका रूपतालिका दिइएको छ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नेत्रम्	नेत्रे	नेत्राणि
द्वितीया	नेत्रम्	नेत्रे	नेत्राणि
तृतीया	नेत्रेण	नेत्राभ्याम्	नेत्रैः
चतुर्थी	नेत्राय	नेत्राभ्याम्	नेत्रेभ्यः
पञ्चमी	नेत्रातुद्	नेत्राभ्याम्	नेत्रेभ्यः
षष्ठी	नेत्रात्-द्	नेत्रयोः	नेत्राणाम्
सप्तमी	नेत्रे	नेत्रयोः	नेत्रेषु
सम्बोधन	हे नेत्र	हे नेत्रे	हे नेत्राणि

यसै गरी मुख, फल, पत्र, पुष्प, पुस्तक, मन्दिर, गृह, छत्र, चित्र, वन आदि शब्दका रूप चल्दछन् ।

नवमः पाठः

ईश-स्तुतिः



भवानी-शङ्करौ वन्दे श्रद्धा-विश्वासरूपिणौ ।
याभ्या विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥१॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्त हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥२॥

१. अन्वयः:- याभ्याम्, विना, सिद्धाः, स्वान्तःस्थम्, ईश्वरम्, न पश्यन्ति ।
श्रद्धाविश्वासरूपिणौ, भवानी-शङ्करौ, (अहम्) वन्दे ।

अर्थः:- अस्मिन् संसारे भवानी- शङ्कराभ्याम् विना सिद्धाः योगिनः अपि
स्वहृदयस्थितम् ईश्वरम् न पश्यन्ति, तौ श्रद्धा-विश्वासरूपिणौ
भवानीशङ्करौ अहम् नमामि ।

शिव र पार्वतीको कृपाविना सिद्ध महात्माहरू पनि आफ्नो हृदयमा रहेका
ईश्वरलाई देख्दैनन्, श्रद्धा र विश्वास रूपका ती शिव र पार्वतीलाई म वन्दना गर्दछु ।

२. अन्वयः:- कर्पूरगौरम्, करुणावतारम्, संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम्, हृदयारविन्दे,
सदा, वसन्तम्, भवानीसहितम्, भवम् (अहम्) नमामि ।

अर्थ:- कर्पूरतुल्यगौरवर्णम्, करुणासम्पन्नम्, ससारस्य साररूपम्,
शेषनागधारिणम् सर्वदा भक्तानाम् हृदयकमले स्थितम् भवानीसहितम्
शिवम् अहम् नमामि ।

(कपूरजस्ता गोरा, दयाका अवतार (धेरै दयालु), ससारका सारतत्त्व, नागराज
वासुक्तिको माला लगाएका, भक्ताका हृदयकमलमा सधैं वास गर्ने पार्वतीसहित
भगवान् शङ्करलाई प्रणाम गर्दछु ।)

शब्दार्थः

भवानी-शङ्करौ = शिव र पार्वती (लाई) सिद्धाः = सिद्ध पुरुषहरू
श्रद्धा-विश्वासरूपिणौ = श्रद्धा र विश्वास रूप भएका ईश्वरम् = ईश्वरलाई
याभ्याम् विना = जो दुई विना न पश्यन्ति = देख्दैनन्
स्वान्तःस्थम् = आफ्नो हृदयमा रहेका वन्दे = ढोग्दछु
कर्पूरगौरम् = कपूरजस्ता गोरा हृदयारविन्दे = हृदयरूपी कमलमा
संसारसारम् = ससारका साररूप वसन्तम् = बसेका
करुणावतारम् = दयाका अवतार भवानीसहितम् = पार्वती सहित
भुजगेन्द्रहारम् = नागराज वासुक्तिको माला लगाउने भवम् = शिवजीलाई

अभ्यासः

१. अधस्तनम् पद्यम् सस्वरम् पठत
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्या विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥
२. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत
सदा, वन्दे, करुणावतारम्, नमामि ।
३. रिक्तस्थानम् पूरयत
..... वन्दे श्रद्धा-विश्वासरूपिणौ ।
याभ्या विना सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥
४. संस्कृते उत्तरयत
(क) सिद्धाः काभ्याम् विना ईश्वरम् न पश्यन्ति ?
(भवानी-शङ्कराभ्याम् विना सिद्धाः ईश्वरम् न पश्यन्ति ।)

- (ख) कः भुजगेन्द्रम् धारयति ? (.....)
(ग) शङ्करस्य वर्णः कीदृशः ? (.....)
(घ) ईश्वरः सदा कुत्र वसति ? (.....)

५. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयन्
पश्यन्ति, सिद्धाः, नमामि, ईश्वरम् ।

६. अनुवाचम् कुरुत

- (क) म ईश्वरलाई ढोग्दछु । (ख) म आँखाले हेर्छु ।
(ग) हामीहरू चिठी लेख्छौं । (घ) विद्यार्थी कलमले लेख्छु ।

विशेष अभ्यास

दीर्घसन्धि र गुणसन्धि

१. दीर्घसन्धि- दुइटा समान वर्ण (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ) को मेल भई एउटै दीर्घवर्णमा परिणत हुँदा दीर्घसन्धि हुन्छ । जस्तै-

अद्य + अपि = अद्यापि (अ + अ = आ)

हृदय + अरविन्दम् = हृदयारविन्दम् (अ + अ = आ)

पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः (अ + आ = आ)

करुणा + अवतारः = करुणावतारः (आ + अ = आ)

विद्या + आलयः = विद्यालयः (आ + आ = आ)

कवि + इन्द्रः = कवीन्द्रः (इ + इ = ई)

गिरि + ईशः = गिरीशः (इ + ई = ई)

भानु + उदयः = भानूदयः (उ = उ = ऊ) इत्यादि ।

२. गुण सन्धि- अवर्ण (अ, आ) देखि पर ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लृ वर्ण आ, भने गुण सन्धि हुन्छ । गुण हुँदा अ (र, ल्), ए, ओ वर्ण आउँछन् । जस्तो-

भुजग + इन्द्रः = भुजगेन्द्रः (अ + इ = ए)

यथा + इष्टम् = यथेष्टम् (आ + इ = ए)

गण + ईशः = गणेशः (अ + ई = ए)

महा + ईश्वरः = महेश्वरः (आ + ई = ए)

पर + उपकारः = परोपकारः (अ + उ = ओ)

विद्या + उदयः = विद्योदयः (आ + उ = ओ)

देव + ऋषिः = देवर्षिः (अ + ऋ = अ (र्) इत्यादि ।

अनुशासन-शिक्षा



सत्यात् न प्रमदिव्यम् । धर्मात् न प्रमदितव्यम् । कुशलात् न प्रमदितव्यम् । भूत्यै न प्रमदितव्यम् । स्वाध्याय-प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम् । देवपितृकार्याभ्याम् न प्रमदितव्यम् । श्रद्धया देयम् । अश्रद्धया देयम् । श्रिया देयम् । ह्रिया देयम् । भिया देयम् । संविदा देयम् । एष आदेशः । एष उपदेशः । एतद् अनुशासनम् ।

शब्दार्थाः

सत्यात्	= सत्यवाट	श्रद्धया = श्रद्धाले
न प्रमदितव्यम्	= मान्तिन् हुदैन्	अश्रद्धया = अश्रद्धाले
धर्मात्	= धर्मवाट	ह्रिया = लाजले
भूत्यै	= धन-सम्पत्तिवाट	श्रिया = धनले अर्थात् धन भएर
देवपितृकार्याभ्याम्	= देवता र पितृको कामवाट	भिया = डरले
कुशलात्	= शुभ कर्मवाट	संविदा = ज्ञान, विवेकले
स्वाध्याय-प्रवचनाभ्याम्	= स्वाध्याय (आफ्नो पढाइ) र प्रवचनवाट	देयम् = दिनुपर्छ
		एषः = यो

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

न प्रमदितव्यम्, भूत्यै, श्रद्धया, ह्रिया ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम्, श्रिया, भिया, भूत्यै ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

ह्रिया, देयम्, न प्रमदितव्यम्, नमामि ।

४. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

धर्मात्, देयम्, पत्रम्, एषः, छात्रः ।

५. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) सत्यात् न प्रमदितव्यम् । (ख) श्रद्धया देयम् । (ग) अहम् शिवम् नमामि ।

(घ) वृक्षात् पत्रम् पतति । (ङ) सः निर्धनाय धनम् ददाति ।

विशेष अभ्यास

सम्प्रदान, कारक, अपादान कारक र सम्बोधन

सम्प्रदान कारक र चतुर्थी विभक्ति

जसलाई दिइन्छ, त्यो सम्प्रदान हुन्छ । सम्प्रदानमा चतुर्थी विभक्ति हुन्छ । जस्तै-
रामः निर्धनाय वस्त्रम् ददाति ।

यसै गरी नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, वषट् शब्दको योगमा पनि चतुर्थी विभक्ति हुन्छ । जस्तैः- श्रीगणेशाय नमः । अग्नये स्वाहा

अपादान कारक र पञ्चमी विभक्ति

जसबाट कुनै वस्तु छुटिन्छ, त्यसलाई अपादान भन्दछन् । अपादानमा पञ्चमी विभक्ति हुन्छ । जस्तैः- वृक्षात् पत्रम् पतति (रूखबाट पात खस्छ) । छात्रः गृहाद् आगच्छति (विद्यार्थी घरबाट आउँछ) ।

यसैगरी जसबाट डर उत्पन्न हुन्छ, त्यसलाई पनि अपादान भई पञ्चमी विभक्ति हुन्छ । जस्तैः- कृषकः व्याघ्राद् विभेति । (किसान बाघसँग डराउँछ) ।

सम्बोधन

कसैलाई बोलाउनुलाई सम्बोधन भनिन्छ । सम्बोधनमा प्रथमाविभक्ति हुन्छ । त्यसैले सम्बोधन वाचक शब्दका रूप प्रथमा विभक्तिसरह हुन्छन् । केवल एक वचनमा केही फरक हुन्छ । जस्तैः-

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सिंहशब्द	प्रथमा विभक्ति	सिंहः	सिंहौ	सिंहाः
	सम्बोधन	हे सिंह	हे सिंहौ	हे सिंहाः
लता शब्द	प्रथमा विभक्ति	लता	लते	लताः ।
	सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः ।
फल शब्द	प्रथमा विभक्ति	फलम्	फले	फलानि
	सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

एकादशः पाठः

त्याज्यो दुर्जनसंसर्गः

एकस्मिन् वने सिंहः वसति स्म । एकदा सिंहः सुप्तः आसीत् । कश्चिद् मूषकः सिंहस्य केसरान् अकृन्तत् । यदा सिंहः जागर्ति तदा तस्य केसराः कर्तिताः आसन् ।

सिंहः विचारितवान्- “मूषक. मम केसरान् अकृन्तत् । अहम् मूषकस्य नाशोपायम् करोमि ।”

इत्थम् विचार्य सिंहः कस्यचिद् विडालस्य समीपे गत्वा अवदत्- “मित्र विडाल, त्वम् मम सहायताम् कुरु । मूषकः मम केसरान् कृन्तति । मम निवासे त्वम् अपि वस । अहम् तव कृते प्रशस्तस्य भोजनस्य व्यवस्थाम् करोमि ।”

विडालः सिंहस्य मधुरवचनैः लोभितः । सः सिंहेन सह तस्य निवासम् अगच्छत् । तत्र विडालः यथेष्टम् भोजनम् प्राप्य प्रसन्नः अभवत् ।

मूषकः विडालस्य भयेन विलाद् बहिः न निरगच्छत् । यदा सुधया पीडितः तदा सः मूषकः विचारितवान्- “आहारम् विना जीवनम् न सम्भवति । परन्तु यदि विलाद् बहिः निर्गच्छामि, तदा विडालः माम् खादति । अतः रात्रौ बहिः गत्वा भोजनम् आनयामि ।”

रात्रौ मूषकः आहारस्य अन्वेषणाय विलाद् बहिः निरगच्छत् । विडालः तम् गृहीत्वा सिंहम् अवदत्- “भो सिंह ! मया मूषकः गृहीतः तव शत्रुः मारितः । अतः परम् आवाम् सुखेन वसावः ।”

मूषकस्य मरणानन्तरम् सिंहः निश्चिन्तः अभवत् । “विडालस्य कार्यम् समाप्तम् । अतः तस्मै भोजनम् न ददामि ।” इति विचार्य सिंहः विडालाय भोजनम् न अदात् ।

क्षुधया व्याकुलः विडालः सिंहम् अभणत्- “भो मृगराज, भवान् स्ववचनम् स्मरतु । मह्यम् आहारम् ददातु ।” इति ।



सिंहः अवदत्- “भो विडाल ! अतः परम् तव प्रयोजनम् नास्ति । यथेच्छम् गच्छ ।”

विडालः अवदत्- “भो सिंह, त्वम् अवसरवादी अतीव कृतघ्नश्च असि । दुर्जनस्य तव वचने न कोऽपि विश्वासः ।”

विडालस्य वचनेन क्रुद्धः सिंह तम् मारयितुं यदा चेष्टते स्म तदा सः विडालः सपदि वृक्षम् आरुह्य स्वजीवनम् अरक्षत् ।

शब्दार्थाः

वसति स्म = वस्तुस्थितौ

सुप्तः = सुतेको

केसराः = जगरहरू

यदा = जब

तदा = तब

इत्थम् = यसरी

एकदा = एक दिन

कश्चिद् = कुनै

अकृन्तत् = काट्यो

जागर्ति = जाग्लु

कर्तिताः = काटिएका

विचारितवान् = विचार गर्‍यो

विडालः	= बिरालो	मम	= मेरो
कुरु	= गर	मधुरवचनैः	= मीठा बोलीले
कृन्तति	= काट्छ	निरगच्छत्	= निस्क्यो
लोभितः	= लोभियो	बिलात्	= दुलाबाट
विचार्य	= विचार गरेर	पीडितः	= दुःखित भएको
आहारम्	= खाना	निर्गच्छामि	= निस्कन्छु
न सम्भवति	= सम्भव हुँदैन	रात्रौ	= राती
गत्वा	= गएर	आनयामि	= ल्याउँछु
गृहीत्वा	= पकडेर, लिएर	गृहीतः	= पकड्यो
यथेच्छम्	= आफूखुशी	क्षुधया	= भोकले
न ददामि	= दिन्न	न अदात्	= दिएन
स्मरतु	= सम्भन्नुहोस्	मह्यम्	= मलाई
ददातु	= दिनुहोस्	क्रुद्धः	= रिसाएको
मारयितुम्	= मार्न	चेष्टते स्म	= चेष्टा गर्न्यो
सपदि	= उत्तिखेर	आरुह्य	= चढेर
स्वजीवनम्	= आफ्नो जीवन	अरक्षत्	= जोगायो
भोमृगराज !	= हे सिंह	स्ववचनम्	= आफ्नो भनाइ
कृतघ्नः	= उपकार बिसर्ने, बैगुनी		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

अकृन्तत्, जागर्ति, क्षुधया, मारयितुम् ।

२. शुद्धम् लिखत

मूषकः, पीडितः, गृहीत्वा, स्वजीवनम्, क्षुधया ।

३. अर्थम् लिखत

जागर्ति, सुप्तः, सपदि, बिलात्, लोभितः ।

४. संक्षेपेण संस्कृते उत्तरयत

(क) सिंहः कुत्र अवसत् ? (उदाहरणम्- सिंहः वने अवसत् ।)

(ख) क्षुधया पीडितः विडालः सिंहम् किम् अवदत् ?

(ग) सिंहः विडालाय केन कारणेन भोजनम् न अदात् ?

(घ) विडालम् प्रति सिंहः केन कारणेन क्रुद्धः ?

(ङ) विडालः कथम् स्वजीवनम् अरक्षत् ?

५. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) सिंहः आसीत् । (सुप्तः, तृषितः, बुभुक्षितः)

(ख) मूषकः मम कृन्तति । (पुच्छम्, केसरान्)

(ग) मया गृहीतः । (मूषकः, विडालः, सिंहः)

(घ) तव नास्ति । (प्रयोजनम्, विनियोजनम्, भोजनम्)

६. परस्परम् मेलयत

(क) मूषकः (क) वृक्षम् आरोहति

(ख) सिंहः (ख) बिले तिष्ठति

(ग) विडालः (ग) विडालेन सह मैत्रीम् करोति ।

७. सत्यस्थले (✓) चिह्नम्, असत्यस्थले (X) चिह्नम् दत्त

(क) विडालः सिंहस्य मधुरवचनैः लोभितः । ()

(ख) मूषकविडालयोः मैत्री अभवत् । ()

(ग) सिंहः वृक्षम् आरोहति । ()

(घ) सिंहः विडालम् अमारयत् ।

(ङ) विडालः क्षुधया पीडितः आसीत् । ()

८. अस्याः कथायाः नेपालीभाषायाम् सारांशम् लिखत ।

९. अधोलिखितानाम् शब्दानाम् सन्धिविच्छेदं कुरुत

अन्वेषणम्, नास्ति, यथेच्छम्, नाशोपायम्, मारणानन्तरम् ।

१०. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) अहम् मूषकस्य नाशोपायम् करोमि ,

(ख) विडालः सिंहस्य मधुरवचनैः लोभितः ।

(ग) सिंहः अवसरवादी अस्ति ।

(घ) विडालः वृक्षम् आरोहति ।

विशेष अभ्यास

उपसर्गको प्रयोग

१. उपसर्गले धातु वा क्रियाको अर्थमा फरक पार्दछ । यसले शब्दको अघिल्लि र लागेर कहिले अर्थलाई थोरैमात्र यताउति पार्दछ भने कहिले अर्थमा आनका तान फरक ल्याउँछ । जस्तै-

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत् ॥

२. उपसर्गहरू यस प्रकार छन्

प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर, दुस्, दुर, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप ।

३. हू धातुको अर्थ हुन्छ - ल्याउनु, तर त्यसमा उपसर्ग लगाउँदा कसरी अर्थ फरक पर्छ, उदाहरणबाट स्पष्ट पार्न सकिन्छ:

आ + हार = आहार: (खानु)

सम् + हार = सहार: (नास्नु)

वि + हार = विहार: (घुम्नु)

प्र + हार = प्रहार: (फ्याँक्नु, हान्नु)

परि + हार = परिहार: (त्यागनु)

वि + आङ् + हार = व्याहार: (भन्नु)

यस्तै जानु अर्थ भएको गम धातुको गच्छतिमा उपसर्ग लगाउँदा आगच्छति (आउँछ), निर्गच्छति (निस्कन्छ), सङ्गच्छते (मिल्छ), अवगच्छति (जान्दछ) इत्यादि ।

द्वादशः पाठः

समाजसुधारकः शुक्रराजशास्त्री



इयम् नेपालभूमिः धन्या अस्ति । अस्याम् एव भूमौ समाजसुधारकः शुक्रराज शास्त्री अजायत । अस्य जन्म १९५० विक्रमाब्दे अभवत् । ललितपुरस्य बकुँवहालनामकस्थले तस्य निवासस्थानम् आसीत् । सः नेवारपरिवारे समुत्पन्नः । अस्य पितुः नाम माधवराज जोशी आसीत् । सः अपि संस्कृतस्य ज्ञाता आसीत् । शुक्रराजः संस्कृते उच्चश्रेण्याम् शास्त्रपरीक्षोत्तीर्णः आसीत् । अतः सः “शास्त्री” इत्युपाधिना विभूषितः अभवत् ।

अयम् षट् पुस्तकानि अलिखत् । सः पुस्तकप्रकाशनसन्दर्भे कलकत्तानगरम् अगच्छत् । तत्र तस्य मदनमोहनमालवीयेन सह सम्पर्कः अभवत् । सः भारतस्य समाजसुधारकः आसीत् ।

शुक्रराजस्य गान्धीमहोदयेन सह अपि सम्पर्कः आसीत् । मदनमोहनमालवीयस्य, गान्धीमहोदयस्य च सम्पर्केण प्रभावितः शुक्रराजः नेपाले स्वतन्त्रतायै समर्पितः अभवत् । राणासर्वकारस्य विरोधे सः संलग्नः अभवत् । अतः सर्वकारप्रमुखः जुद्धशमशेरः शुक्रराजम् कारागृहे अस्थापयत् ।

किञ्चित्कालानन्तरम् शुक्रराजः कारागृहात् मुक्तः अभवत् । किन्तु पुनः सः काष्ठमण्डपस्य “इन्द्रचोक” नामके स्थाने राणासर्वकारविरोधि प्रवचनम् अकरोत् । तस्मात् कारणात् १९९७ विक्रमाब्दे माघमासे “टेकु” नामकस्थले राणासर्वकारः शुक्रराजस्य प्राणान् अहरत् ।

२००७ वैक्रमाब्दे नेपाले राणाशासनस्य समाप्तिः अभवत् । प्रजातन्त्रस्य स्थापना अभवत् । शुक्रराजशास्त्री हुतात्मा घोषितः । सः समाजस्य सुधारकः स्वतन्त्रतायाः समर्थकः च अस्ति । प्रजातन्त्रस्य पोषकः शुक्रराजशास्त्री अधुना अपि जनानाम् प्रेरणादायकः अस्ति ।

शब्दार्थाः

समाजसुधारकः	= समाजलाई सुधार गर्ने	धन्या	= धन्य
अतः	= यस कारण	अजायत	= जन्मिए, भए, भयो
विभूषितः	= अलङ्कृत	राणासर्वकारस्य	= राणासरकारको
कारागृहात्	= भ्यालखानाबाट	मुक्तः	= छोडिएको
प्रवचनम्	= भाषण, प्रवचन	हुतात्मा	= शहीद
प्राणान् अहरत्	= प्राण लियो, मान्यो	घोषितः	= घोषणा गरियो
स्वतन्त्रतायाः	= स्वतन्त्रताको		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

नेपालभूमिः, समुत्पन्नाः, उत्तीर्णः, अस्थापयत् ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

परीक्षा, प्रभावितः, शास्त्री, उपाधिः ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

हुतात्मा, कारागृहात्, अजायत, विभूषितः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) शुक्रराजस्य जन्म कदा अभवत् ?

(उदाहरणम्- शुक्रराजस्य जन्म १९५० वैक्रमाब्दे अभवत् ।)

(ख) तस्य पितुः किम् नाम ?

(ग) सः केन उपाधिना विभूषितः ?

(घ) भारतस्य केन समाजसुधारकेण सह शुक्रराजस्य सम्पर्कः आसीत् ?

५. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) शुक्रराजस्य सम्पर्कः सह अभवत् ।

(गान्धीमहोदयेन, लालबहादुरमहोदयेन, सुवासचन्द्रमहोदयेन)

(ख) राणासर्वकारः ... वैक्रमाब्दे शुक्रराजस्य प्राणान् अहरत् ।

(१९९५, १९९७, २००७)

(ग) शुक्रराजस्य समये राणासर्वकारस्य प्रमुखः आसीत् ।

(पद्मशमशेरः, जुद्धशमशेरः, मोहनशमशेरः)

६. अधोतिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

धन्या, समाजसुधारकः, षट्, परीक्षा

७. शुक्रराजस्य विषये पञ्चवाक्यानि लिखत

८. उदाहरणम् अनुसृत्य रूपाणि लिखत

धातुः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
-------	---------	-----------	----------

भू (भव)	अभवः	अभवतम्	अभवत
---------	------	--------	------

(हुनु)

गम् (गच्छ्)
-------------	-------	-------	-------

(जानु)

वद् (भन्तु)
-------------	-------	-------	-------

पठ् (पठ्नु)
-------------	-------	-------	-------

९. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) शुक्रराजः समाजसुधारकः आसीत् ।

(ख) अयम् षट् पुस्तकानि अलिखत् ।

(ग) सः राणाविरोधि प्रवचनम् अकरोत् ।

(घ) सः स्वतन्त्रतायाः समर्थकः आसीत् ।

विशेष अभ्यास

तद् र किम् शब्द

१. तद् शब्द- "त्यो" अर्थ बुझाउने तद् शब्दका पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग र नपुंसक लिङ्गमा भिन्नाभिन्नै रूप हुन्छन् । जस्तै-

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुलिङ्ग	सः	तौ	ते
स्त्री	सा	ते	ताः
नपुं	तत्	ते	तानि

२. किम् शब्द- के/ को भन्ने अर्थ बुझाउने किम् शब्दका पनि लिङ्ग अनुसार अलग रूप हुन्छन् । जस्तै

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पुं	कः	कौ	के
स्त्री	का	के	काः
नपुं	किम्	के	कानि ।

वाक्यमा प्रयोग-

- कः वदति ? का हसति ? सा हसति ।
 रामः वदति । किम् पतति ? पत्रम् पतति, इत्यादि ।

त्रयोदशः पाठः

स्वच्छम् जलम्

[द्वे सख्यौ विद्यालये पठतः । तयोः ग्रामे जलस्य समस्या अस्ति । विद्यालये पठित्वा यदा ते निवर्तते तदा जलसमस्यायाः समाधानविषये वार्तालापम् कुरुतः ।]

- उमा- रमे ! स्वच्छम् जलम् पातव्यम् इति शिक्षकः कथयति ।
रमा- स्वच्छम् जलम् कुत्र अस्ति ? जलम् एव नास्ति ।
उमा- अस्माकम् ग्रामे अपि पेयजलस्य व्यवस्था नास्ति ।
रमा- तर्हि जलस्य विषये किम् कर्तव्यम् ?



- उमा- अद्यपर्यन्तम् जलस्य व्यवस्था कीदृशी अस्ति ?
पश्चाद् अपि तादृशी एव भविष्यति ।
रमा- नहि-नहि अस्माभिः अपि अस्मिन् विषये विचारणीयम् ।
उमा- किम् विचारणीयम् ?
रमा- वयम् गृहम् गत्वा पितॄन् पेयजलस्य विषये वदिष्यामः ।
उमा- किम् वदिष्यामः ?
रमा- ग्रामे कूपम् बापीम् नलिकाम् वा निर्माय पेयजलस्य व्यवस्था कर्तव्या ।
उमा- ग्रामस्य निकटे जलस्य स्रोतः अस्ति ?
रमा- निकटे नास्ति ।
उमा- तर्हि सर्वैः ग्रामीणैः मिलित्वा उपायः चिन्तनीयः ।

- रमा- उपायः तु नलिकामाध्यमेन जलम् आनेतव्यम् ।
उमा- जलस्य समस्या विशेषेण महिलानाम् कृते भवति ।
रमा- आम्, अतः सक्रियरूपेण वयम् संलग्नाः भविष्यामः ।
उमा- अस्मिन् युगे पेयजलस्य महत्त्वम् सर्वत्र स्वीकृतम् ।
रमा- तर्हि वयम् समाजम् अस्मिन् कार्ये प्रेरयामः ।
उमा- समस्यायाः समाधाने यथासमयम् भोजनम् भविष्यति ।
रमा- अतः यथासमयम् एव विद्यालयम् गमिष्यामः ।

शब्दार्थाः

स्वच्छम्	= सफा	जलम्	= पानी
पातव्यम्	= पिउनुपर्छ	अस्माकम्	= हाम्रो
ग्रामे	= गाउँमा	पेयजलस्य	= पिउने पानीको
तर्हि	= त्यसोभए	कर्तव्यम्	= गर्नुपर्दछ
अद्यपर्यन्तम्	= आजसम्म	कीदृशी	= कस्तो
अधुना	= अहिले	तादृशम्	= त्यस्तो
नहि	= होइन	अस्माभिः	= हामीहरूले
पितृन्	= बुबाहरूलाई	वदिष्यामः	= भन्नेछौं
कूपम्	= कुवा, इनार	वापी	= तलाउ, सानो पोखरी
नलिकाम्	= नाला	निर्माय	= बनाएर
निकटे	= नजिकमा	स्रोतः	= मुहान
ग्रामीणैः	= गाउँलेहरूले	मिलित्वा	= मिलेर
उपायः	= जुक्ति	चिन्तनीयः	= विचारगर्नुपर्छ
आनेतव्यम्	= ल्याउनुपर्छ	आम्	= अँ
भविष्यामः	= हुनेछौं	प्रेरयामः	= प्रेरणा दिन्छौं
गमिष्यामः	= जानेछौं	निवर्तते	= फर्किन्छन् (दुई वचन)
वार्तालापम्	= कुराकानी	विचारणीयम्	= विचार गर्नुपर्छ
यथासमयम्	= ठीक समयमा		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

पातव्यम्, कीदृशी, पितृन्, चिन्तनीयः ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

विचारणीयम्, कूपम्, वदिष्यामः, ग्रामीणैः, मिलित्वा ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

वयम्, स्वच्छम्, पेयजलस्य, स्रोतः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) कीदृशम् जलम् पातव्यम् ? (उदाहरणम्- स्वच्छम् जलम् पातव्यम् ।)

(ख) ग्रामे पेयजलम् अस्ति न वा ?

(ग) पेयजलस्य व्यवस्था कथम् भवति ?

(घ) उमारमयोः ग्रामे का समस्या ?

(ङ) ग्रामस्य निकटे पेयजलस्य स्रोतः अस्ति न वा ?

५. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

जलम्, किम्, वयम्, नास्ति ।

६. उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानम् पूरयत

धातुः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
भू (भव्)	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः
वद्	वदिष्यामि	वदिष्यावः
गम्	गमिष्यामि	गमिष्यामः
पठ्	पठिष्यावः	पठिष्यामः

७. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

(क) हामी सफा पानी पिउँछौं ।

(ख) म ईश्वरलाई ढोग्छु ।

(ग) फूल फुल्छ ।

(घ) रमा पढ्छे ।

विशेष अभ्यास

भविष्यत् काल लृट् लकारः

पछि आउने समय बोध गराउने काल भविष्यत् काल हुन्छ । यस कालमा लृट् लकारको प्रयोग हुन्छ । भविष्यत् कालका प्रत्यय वर्तमान कालका प्रत्ययभै हुन्छन्, बीचमा धातुमा 'इष्य' वा 'स्य' थपिन्छ । जस्तै-

धातु-वद्

प्र. पु.	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
म. पु.	वदिष्यसि	वदिष्यथः	वदिष्यथ
उ. पु.	वदिष्यामि	वदिष्यावः	वदिष्यामः

धातु-पठ्

पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

धातु-गम्

गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

वस्, जीव्, धाव्, रक्ष्, खन्, अर्ज्, वि + कस्, वि + चर्, अट्, यी धातुका भविष्यत् काल लृट् लकारका रूप वद्, पठ् धातुका जस्तै हुन्छन् ।

चतुर्दशः पाठः

मकरसङ्क्रान्तिः



नेपालदेशे जनाः विभिन्नानि पर्वाणि मानयन्ति । तानि यथा- विजयादशमी, यमपञ्चकम्, श्रावणसंक्रान्तिः, मकरसंक्रान्तिः (माघसंक्रान्तिः) च ।

माघमासस्य प्रथमः दिवसः माघसंक्रान्तिः कथ्यते । अस्मिन् दिने सूर्यः मकरराशिम् प्रविशति । अतः माघसंक्रान्तेः अपरम् नाम मकरसंक्रान्तिः अस्ति । अस्माद् दिनाद् सूर्यस्य गतिः दक्षिणतः उत्तरदिशम् प्रति भवति । अतः अयम् दिवसः उत्तरायणस्य आरम्भः मन्यते ।

जनाः अस्मिन् पर्वणि गृहे-गृहे उत्सवम् मानयन्ति । नेपालकाः जनाः अस्मिन् दिने नदीम् गत्वा स्नान्ति । विशेषरूपेण नेपालीयाः देवघाटम्, दोलालघाटम्, शङ्खमूलम्, बराहक्षेत्रम्, रुरूक्षेत्रम् च गच्छन्ति । इत्यादीनि स्थानानि पवित्रस्थलानि मन्यन्ते । धार्मिकदृष्ट्या शारीरिकदृष्ट्या च स्नानस्य बहुमहत्त्वम् अस्ति ।

जनाः इदम् पर्व नेपालस्य सर्वेषु भागेषु मानयन्ति । ते अस्मिन् दिने ईश्वरस्य पूजाम् कुर्वन्ति । आमोदेन प्रमोदेन च समयम् यापयन्ति । जनाः विशेषरूपेण तिलानाम् मोदकानि घृतम् कृशरम् च खादन्ति ।

देवस्थलेषु नदीसङ्गमेषु च अस्मिन् दिने मेला भवति । जनाः तत्र सोल्लासम् परस्परम् मिलन्ति । सामूहिकम् उत्सवम् च कुर्वन्ति । गृहे-गृहे अपि जनाः सम्बन्धिनः आमन्त्रयन्ति । सहभोजनम् च कुर्वन्ति ।

माघसंक्रान्तिपर्व न केवलम् धार्मिकदृष्ट्या किन्तु सामाजिकदृष्ट्या वैज्ञानिकदृष्ट्या मनोरञ्जनात्मकदृष्ट्या च महत्त्वपूर्णम् अस्ति ।

शब्दार्थाः

जनाः	= मानिसहरू	विभिन्नानि	= धेरै प्रकारका
मानयन्ति	= मान्दछन्	यथा	= जस्तै
यमपञ्चकम्	= तिहारका पाँच दिन	मकरसंक्रान्तिः	= माघसंक्रान्ति
माघमासस्य	= माघ महिनाको	प्रथमः	= पहिलो
दिवसः	= दिन	कथ्यते	= भनिन्छ
प्रविशति	= प्रवेश गर्दछ	स्नान्ति	= नुहाउँछन्
तिलानाम्	= तिलहरूका	मोदकानि	= लड्डूहरू
देवस्थलेषु	= देवताका स्थानमा	नदीसङ्गमेषु	= नदी मिलने ठाउँमा
आमन्त्रयन्ति	= निम्ता गर्दछन्	मिलन्ति	= मिल्दछन्
संक्रान्तिः	= सूर्य एक राशिबाट अर्को राशिमा सर्नु र महिनाको पहिलो दिन ।		
कृशरः	= खिचडी, खिच्रो	रुरूक्षेत्रम्	= रिडी

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

संक्रान्तिः, आरम्भः, स्नान्ति, मकरराशिः ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

विभिन्नानि, संक्रान्तिः, पवित्रस्थलानि, मानयन्ति ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

दिवसः, विशतिः, आमन्त्रयति, मोदकानि ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) सूर्यः कदा मकरराशिम् प्रविशति ?

(उदाहरणम्- माघस्य प्रथमे दिवसे सूर्यः मकरराशिम् प्रविशति ।)

(ख) मकरसंक्रान्तौ नेपालीयाः कुत्र गच्छन्ति ?

(ग) कया दृष्ट्या स्नानस्य महत्त्वम् अस्ति ?

(घ) अस्मिन् दिने जनाः विशेषरूपेण किम् खादन्ति ?

(ङ) अस्मिन् दिने कुत्र मेला भवति ?

५. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) माघमासस्य प्रथमः दिवसः कथ्यते । (मेषसंक्रान्तिः, मकरसंक्रान्तिः, कर्कटसंक्रान्तिः)

(ख) मकरसंक्रान्तौ आरम्भः भवति । (उत्तरायणस्य, दक्षिणायणस्य, मध्यमायनस्य)

(ग) जनाः मकरसंक्रान्तिदिने स्नान्ति । (नदीम् गत्वा, गृहे स्थित्वा, विदेशम् गत्वा)

(घ) अस्मिन् दिने मेला भवति । (ग्रामेषु, गृहेषु, देवस्थलेषु)

६. पञ्चानाम् नदीनाम् नामानि लिखत ।

७. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

दिवसः, गत्वा, पर्व, खादन्ति, मोदकम् ।

८. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) जनाः मकरसंक्रान्तौ नदीषु स्नान्ति ।

(ख) नेपालीयाः मकरसंक्रान्तौ तीर्थम् गच्छन्ति ।

(ग) जनाः तिलानाम् मोदकानि खादन्ति ।

(घ) अहम् जलम् पिबामि ।

९. पञ्चवाक्यैः माघसंक्रान्तेः वर्णनम् कुरुत ।

विशेष अभ्यास

यण् सन्धि र वृद्धि सन्धि

१. यण् सन्धि

इ, उ, ऋ, लृ वर्णदिशि पर अच् (अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ) वर्ण भएमा यण्सन्धि हुन्छ । यण् भनेको य, व, र, ल हुन्, त्यसैले सन्धिमा इ, उ, ऋ, लृ का ठाउँमा क्रमशः य्, व्, र्, ल् वर्ण हुन्छन्, तर दुवैतर्फ समान वर्ण भएमा यण् हुँदैन, दीर्घ हुन्छ । जस्तै-

यदि + अपि = यद्यपि (इ + अ = य्)

इति + आदि = इत्यादि (इ + आ = या)

प्रति + एकम् = प्रत्येकम् (इ + ए = ये)

सु + आगतम् = स्वागतम् (उ + आ = वा)

अनु + एषणम् = अन्वेषणम् (उ + ए = वे)

पितृ + अंशः = पित्रंशः (ऋ + अ = र्)

लृ + अकारः = लकारः (लृ + अ = ल्)

२. वृद्धि सन्धि

अ वा आदेखि ए, ऐ, ओ, औ, पर भएमा अ वा आ सित ए, ऐ मिली ऐ हुन्छ, ओ औ मिली औ हुन्छ । यस्तो सन्धिलाई वृद्धिसन्धि भनिन्छ । जस्तै-

अ + ए = ऐ = अद्य + एव = अद्यैव ।

आ + ऐ = ऐ = महा + ऐश्वर्यम् = महैश्वर्यम् ।

अ + ओ = औ = स्वच्छ + ओदनम् = स्वच्छौदनम् ।

आ + ओ = औ = महा + ओषधिः = महौषधिः ।

आ + औ = औ = महा + औषधम् = महौषधम् ।

पञ्चदशः पाठः

हास्य-पद्यम्

सदा वक्रः सदा क्रूरः सदा पूजामपेक्षते ।

कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः ॥१॥

असारे खलु संसारे सार श्वशुरमन्दिरम् ।

हरो हिमालये शेते हरिः शेते महोदधौ ॥२॥

१. अन्वयः- जामाता, सदा वक्रः, सदा क्रूरः, सदा पूजाम् अपेक्षते । नित्यम् कन्याराशिस्थितः, दशमः ग्रहः (अस्ति) ।

अर्थः- कन्यायाः पितुः कृते जामाता सदा वक्रः भवति । सदा निर्दयी भवति, सदा पूजाम् इच्छति । नित्यम् कन्याराशिस्थितः भवति । एतादृशः जामाता दशमः ग्रहः अस्ति ।

(ससुराका निम्ति जुवाईं सधैं बाङ्गो हुन्छ । सधैं निर्दयी हुन्छ । सधैं पूजा अथवा मानसम्मान चाहन्छ । यसरी सधैं नै जुवाईं कन्याराशिमा रहने दशौं ग्रह हुन्छ ।)

२. अन्वयः- असारे संसारे, खलु सारम् श्वशुरमन्दिरम् (अस्ति) । हरः हिमालये शेते । हरिः तु महोदधौ शेते ।

अर्थः- सारहीनम् संसारम् अस्ति । खलु अस्मिन् संसारे सारम् श्वशुरमन्दिरम् अस्ति । अतः एव शङ्करः हिमालये शेते । भगवान् नारायणश्च सागरे शेते ।

(तत्त्वविहीन यस संसारमा तत्त्व छ भने केवल ससुरालीमा नै छ । यसकारणले नै भगवान् शङ्कर हिमालमा सुत्नुहुन्छ । भगवान् विष्णु समुद्रमा सुत्नुहुन्छ ।)

शब्दार्थाः

सदा	= सधै	वक्रः	= बाङ्गो
क्रूरः	= कठोर, निर्दयी	पूजाम्	= पूजा (लाई)
अपेक्षते	= चाहन्छ	कन्याराशिस्थितः	= कन्या राशिमा बस्ने
नित्यम्	= सधै	जामाता	= जुवाई
दशमः	= दशौ	ग्रहः	= ग्रह
असारे	= सार तत्त्व नभएको	संसारे	= संसारमा
खलु	= निश्चय	सारम्	= तत्त्व, सार, गुदी
श्वशुरमन्दिरम्	= ससुराको घर, ससुराली	हरः	= महादेव, शिवजी
हिमालये	= हिमालमा	हरिः	= भगवान् विष्णु
महोदधौ	= समुद्रमा	शेते	= सुत्दछन्

अभ्यासः

१. अधस्तनम् पद्यम् लयात्मकरूपेण पठत

सदा वक्रः सदा क्रूरः सदा पूजामपेक्षते ।

कन्याराशिस्थितो नित्यं जामाता दशमो ग्रहः ॥

२. अधस्तनम् पद्यम् कण्ठस्थम् श्रावयत

असारे खलु संसारे सारं श्वशुरमन्दिरम् ।

हरो हिमालये शेते हरिः शेते महोदधौ ॥

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

सदा, क्रूरः, जामाता, दशमः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) कः सदा वक्रः ?

(ख) दशमः ग्रहः कः ?

(ग) संसारस्य सारतत्त्वम् किम् ?

(घ) हरः कुत्र शेते ?

(ङ) हरिः कुत्र शेते ?

५. परस्परम् मेलयत

- | | |
|---------------------|-----------------------|
| (क) हरः शेते | (क) जामाता दशमः ग्रहः |
| (ख) हरिः शेते | (ख) श्वशुरमन्दिरम् |
| (ग) कन्याराशिस्थितः | (ग) महोदधौ |
| (घ) ससारे सारम् | (घ) हिमालये |

६. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

हरः, शेते, क्रूरः, अपेक्षते, पूजाम्, जामाता । (यथा- हरः हिमालये शेते ।)

७. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

- (क) अहम् श्वशुरमन्दिरम् गच्छामि ।
(ख) जामाता पूजाम् अपेक्षते ।
(ग) हरः हिमालये शेते ।
(घ) त्वम् कुत्र गच्छसि ?

विशेष अभ्यास

तत्सम र तद्भव शब्द

नेपालीभाषामा संस्कृतबाट दुई प्रकारले शब्दहरू आएका छन्- तत्सम र तद्भव । संस्कृत शब्द जस्ताको तस्तै नेपालीमा आएका छन् भने तिनलाई तत्सम भनिन्छ, तर उही अर्थ भए पनि संस्कृतबाट रूपमा केही फरक परिआएका शब्दलाई तद्भव भनिन्छ । जस्तै-

तत्सम		तद्भव	
संस्कृत	नेपाली	संस्कृत	नेपाली
सदा	= सदा	श्वसुरः	= ससुरा
पूजा	= पूजा	भक्तम्	= भात
कन्या	= कन्या	ओष्ठः	= ओठ
राशिः	= राशि	हस्तः	= हात
ग्रहः	= ग्रह	तैलम्	= तेल
हरिः	= हरि	सन्ध्या	= साँझ
हिमालयः	= हिमालय	दन्तः	= दाँत
मन्दिरम्	= मन्दिर	व्याघ्रः	= बाघ
प्रथमः	= प्रथम	विडालः	= बिरालो
दशमः	= दशम	चैत्रः	= चैत

षोडशः पाठः

न मूर्खो हितकारकः

एकस्मिन् नगरे भूमिपतिः आसीत् । तस्य भवने बहवः पशवः आसन् । तेषु अजाः, मेषाः, वृषाः, शृगालाः, घोटकाः, वानराः, आसन्, कपोताः, शुकाः, मयूराः, मत्स्याः इत्यादयः अपि तत्र आसन् । ते सर्वे स्वामिनः सेवाम् अकुर्वन् ।

तेषु एकः वानरः भूमिपतेः प्रियः अभवत् । अतः सः सर्वदा स्वामिनः सेवाम् कृत्वा समयम् अनयत् ।



एकदा भूमिपतिः सुप्तः आसीत् । वानरः तस्य रक्षकः भूत्वा अतिष्ठत् । तदा काचित् मक्षिका भूमिपतेः नासिकायाम् अवसत् । वानरः ताम् निवारयितुम् प्रायतत । किन्तु सा मक्षिका पुनः पुनः आगत्य तत्रैव अतिष्ठत् । कुद्बः वानरः मक्षिकाम् मारयितुम् खड्गम् प्राहरत् ।

ततः मक्षिका उड्डीय दूरम् अगच्छत् । किन्तु खड्गस्य प्रहारेण भूमिपतेः नासिका छिन्ना अभवत् । मूर्खस्य संगतिः सर्वान् पीडयति । तस्मात् नीतिशास्त्रे अपि कथितम् अस्ति- "न मूर्खो हितकारकः" ।

शब्दार्थाः

एकस्मिन्	= एउटा	नगरे	= शहरमा
भूमिपतिः	= जमिन्दार, राजा	पशवः	= पशुहरू
अजाः	= बोकाहरू	शृगालाः	= स्यालहरू
वानराः	= बाँदरहरू	शुकाः	= सुगाहरू
मत्स्याः	= माछाहरू	स्वामिनः	= मालिकको
प्रियः	= प्यारो	कृत्वा	= गरेर
तदा	= त्यही बेला	अतिष्ठत्	= रह्यो, बस्यो
काचित्	= कुनै	तस्य	= तिनको
भवने	= घरमा	अकुर्वन्	= गर्दथे
निवारयितुम्	= धपाउन, हटाउन	आगत्य	= आएर
मारयितुम्	= मार्न	प्राहरत्	= हान्यो
प्राहरत्	= हान्यो	प्रायतत	= प्रयत्न गर्‍यो
पीडयति	= दुःख दिन्छ	खड्गम्	= खड्ग, तरवार
उड्डीय	= उडेर	छिन्ना	= काटियो

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत
भूमिपतिः, शृगालाः, मत्स्याः, निवारयितुम् ।
२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत
भूमिपतेः, सुप्तः, नासिकायाम्, पीडयति ।
३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत
भूमिपतिः, उड्डीय, आगत्य, छिन्ना ।

४. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

वानरः, आगत्य, खड्गम्, अगच्छत् ।

५. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) एकस्मिन् भूमिपतिः आसीत् । (वने, नगरे, भवने)

(ख) वानरः मक्षिकाम् खड्गम् प्राहरत् । (मारयितुम्, निवारयितुम्, कारयितुम्)

(ग) मक्षिका भूमिपतेः अवसत् । (कर्णे, नासिकायाम्, मुखे)

(घ) मूर्खस्य सगतिः सर्वान् । (सुखयति, आनयति, पीडयति)

६. संस्कृते उत्तरयत

(क) भूमिपतेः गृहे के के पशवः आसन् ?

(उदाहरणम्- भूमिपतेः गृहे अजाः, मेषाः, वृषाः, शृगालाः, घोटकाः वानराः आसन्)

(ख) तस्य गृहे के के पक्षिणः आसन् ?

(ग) वानरः कस्य प्रियः आसीत् ?

(घ) मूर्खस्य सगतिः किम् करोति ?

(ङ) वानरः किमर्थम् खड्गम् प्राहरत् ?

७. उदाहरणम् अनुसृत्य रूपाणि लिखत

धातुः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
नी (लैजानु)	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
वस्, वस्नु,
स्था (तिष्ठ) रहन्
गम् (गच्छ) जानु
भू (भव) (हुन्)

८. अनुवादम् कुरुत

(क) उमा किताब पढ़े ।

(ख) बाँदर प्यारो थियो ।

(ग) हामी संस्कृत पढ्छौं ।

(घ) मूर्खको संगतले दुःख दिन्छ ।

विशेष अभ्यास

भूतकाल, लङ्लकार

बितेको समय बुझाउने काल भूतकाल हुन्छ । यसमा सामान्यतः लङ्लकारको प्रयोग हुन्छ । यसमा धातुका अगाडि अ थपिन्छ । केही उदाहरण-

धातु	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ् (पढ्नु)	प्रथम	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
	मध्यम	अपठः	अपठतम्	अपठत
	उत्तम	अपठम्	अपठाव	अपठाम
धाव् (दौड्नु)	प्रथम	अधावत्	अधावताम्	अधावन्
	मध्यम	अधावः	अधावतम्	अधावत
	उत्तम	अधावम्	अधावाव	अधावाम
गम् (जानु)	प्रथम	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
	मध्यम	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
	उत्तम	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

वद्, चल्, जीव्, रक्ष्, नम्, खन्, वस् आदि धातुका भूतकाल लङ्लकारका रूप पठ् धातुका जस्तै हुन्छन् ।

सप्तदशः पाठः

उद्यानम् गच्छाव



श्यामः - राधे ? आगच्छ, उद्यानम् गच्छाव ।

राधा - किमर्थम् ?

श्यामः - तत्र गत्वा पुष्पाणि आनेष्यावः ।

राधा - उद्याने अधुना पुष्पाणि न सन्ति ।

श्यामः - उद्याने पुष्पाणि न सन्ति ? एतत् तु महत् आश्चर्यम्

राधा - आम्, सत्यम् वदामि । उद्याने पुष्पाणि न सन्ति ।

श्यामः - जनाः अधुना प्रायेण वृक्षान् न रोपयन्ति ।

राधा - रोपितानाम् वृक्षाणाम् संरक्षणम् अपि न कुर्वन्ति । अथ कथम् पुष्पाणि भवेयुः ।

श्यामः - सत्यम् वदसि । प्राचीनसमये जनाः गृहे-गृहे तुलसीरोपणम् कुर्वन्ति स्म । मार्गे-मार्गे वट-पिप्पलरोपणम् कुर्वन्तिस्म । स्थाने-स्थाने वनानि च आसन् ।

राधा - अत एव तदा समये-समये वृष्टिः अभवत् । भूस्खलनम् न्यूनम् आसीत्
 खाद्यान्नस्य अभावः अपि न आसीत् ।
 श्याम - वातावरणम् अपि तदा स्वच्छम् आसीत् ।
 राधा - अधुना वातावरणस्य स्वच्छतायै कः उपायः कर्तव्यः ?
 श्यामः - वातावरणस्य स्वच्छतायै नागरिकेषु जागरणम् आवश्यकम् ।
 राधा - कीदृशम् जागरणम् ?
 श्यामः - जनाः यत्रतत्र मलक्षेपणम् न कुर्वन्तु । मार्गेषु नदीषु च स्वच्छता स्थापनीया ।
 राधा - स्वच्छतास्थापनेन एव किम् भवति ?
 श्यामः - रोगाणाम् प्रसारः न भवति । नगरस्य सौन्दर्यम् च वर्धते ।
 राधा - अपरम् किम् कर्तव्यम् ?
 श्यामः - स्थाने-स्थाने वृक्षाणाम् रोपणम् कर्तव्यम् । उद्यानस्य निर्माणम् च कर्तव्यम् ।
 राधा - अतीव शोभनः उपायः अस्ति ।
 राधाश्यामौ - आवाम् अपि अस्मिन् कार्ये सलग्नौ भवाव ।

शब्दार्थाः

आगच्छ	= आऊ	उद्यानम्	= बगैचा
गच्छाव	= जाऔं (दुई वचन)	किमर्थम्	= किन
आनेष्यावः	= ल्याउनेछौं (दुई वचन)	अधुना	= अहिले
वृक्षान्	= रूखहरू (लाई)	प्रायेण	= धेरैजसो
रोपयन्ति	= रोप्टछन्	वृष्टिः	= वर्षा
भूस्खलनम्	= जमिन बग्नु, पहिरो जानु	खाद्यान्नस्य	= खाने अन्नको
मलक्षेपणम्	= फोहरमैला फ्याँक्नु	स्थापनीया	= राख्नुपर्छ
भवाव	= होऔं (दुई वचन)	कुर्वन्ति स्म	= गर्दथे

१. शुद्धम् उच्चारयत

आनेष्यावः, आश्चर्यम्, भूखलनम्, स्थापनीया ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

प्राचीनसमये, तुलसीरोपणम्, स्वच्छता, सौन्दर्यम् ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

पुष्पाणि, किमर्थम्, मलक्षेपणम्, वृष्टिः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) उद्याने पुष्पाणि सन्ति न वा ? (उदाहरणम्- उद्याने पुष्पाणि न सन्ति ।)

(ख) प्राचीनसमये भूखलनम् आसीत् न वा ?

(ग) स्वच्छतास्थापनेन किम् भवति ?

(घ) प्राचीनसमये वातावरणम् कीदृशम् आसीत् ?

५. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

जलम्, उद्यानम्, सन्ति, स्वच्छम् ।

६. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) जनाः अधुना प्रायेण न रोपयन्ति । (वृक्षान्, उद्यानम्, पुष्पाणि)

(ख) प्राचीनसमये भूखलनम् आसीत् । (अधिकम्, न्यूनम्, साधारणम्)

(ग) जनाः तुलसीरोपणम् कुर्वन्ति स्म । (गृहे, वने, मार्गे)

(घ) उद्याने अधुना न सन्ति । (वनानि, पुष्पाणि, कमलानि)

७. सन्धिबिच्छेदम् कुरुत

खाद्यान्नम्, करुणावतारम्, यथेच्छम्, परीक्षोत्तीर्णः ।

८. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) आवाम् पुष्पाणि आनेष्यावः ।

(ख) वातावरणम् स्वच्छम् आसीत् ।

(ग) रोगाणाम् प्रसारः न भवति ।

(घ) त्वम् सत्यम् वदसि ।

विशेष अभ्यास

द्विवचनको प्रयोग

संस्कृतमा तीन वचन छन्- एकवचन, द्विवचन र बहुवचन । कर्ता अनुसार क्रियाको रूप चल्ने हुनाले एकवचन कर्तामा एकवचन क्रिया र बहुवचन कर्ता बहुवचन क्रियाको प्रयोग गरेजस्तै द्विवचन कर्ता भएमा क्रिया पद पनि द्विवचनकै प्रयोग गर्नुपर्दछ । तलको तालिकाबाट विभिन्न वचनको प्रयोगबारे बुझ्न सकिन्छ ।

	कर्ता	क्रिया
एकवचन	छात्रः	पठति
द्विवचन	छात्रौ	पठतः
बहुवचन	छात्राः	पठन्ति

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

	कर्ता	क्रिया
एकवचन	बालिका	खादति
द्विवचन	बालिके	खादतः
बहुवचन	बालिकाः	खादन्ति

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

	कर्ता	क्रिया
एकवचन	पत्रम्	पतति
द्विवचन	पत्रे	पततः
बहुवचन	पत्राणि	पतन्ति

यस्तै- आवाम् गच्छावः (हामी दुई जान्छौं), तौ हसतः (ती दुई हाँस्छन्),
घोटकौ धावतः (दुई घोडा दौडन्छन्) ।

अष्टादशः पाठः

नीति-पद्यानि

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥१॥

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥२॥

शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ॥३॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥४॥

१. अन्वयः- लघुचेतसाम्, अयम्, निजः, परः, वा, इति गणना, उदारचरितानाम्, तु, वसुधा, एव, कुटुम्बकम् (भवति) ।

अर्थः- क्षुद्राः जनाः अयम् निजः अयम् परः इति वदन्ति । परन्तु उदारहृदयानाम् संसारस्य सर्वे एव जनाः कुटुम्बस्वरूपाः भवन्ति ।

(छोटो बुद्धि भएका मानिसहरू यो मेरो आफ्नो र त्यो अर्काको हो भनी गणना गर्दछन् । ठूलो हृदय भएका मानिसहरू त आफन्त वा पराइ नभनीकन संसारका सबै मानिसलाई एकै परिवारका ठान्दछन् ।)

२. अन्वयः- इह, भूतिम्, इच्छता, पुरुषेण, षड् दोषाः, निद्रा, तन्द्रा, भयम्, क्रोधः, आलस्यम्, दीर्घसूत्रता (च) हातव्याः ।

अर्थः- लोके ऐश्वर्यम् इच्छता जनेन निद्रा तन्द्रा भयम् क्रोधः आलस्यम् दीर्घसूत्रता इति षड् दोषाः त्याज्याः ।

(यस ससारमा कल्याण अर्थात् ऐश्वर्य चाहने व्यक्तिले ज्यादा निद्रा, तन्द्रा (उँघाइ) डर, रीस, अल्छीपन, जुम्सोपन यी ६ वटा दोषलाई छोड्नुपर्दछ) ।

३. अन्वयः- शनैः, पन्थाः, शनैः, कन्था, शनैः पर्वतलङ्घनम्, शनैः, विद्या, शनैः, वित्तम् एतानि पञ्च शनैः शनैः भवन्ति ।

अर्थः- सुदीर्घः पन्थाः अपि शनैः, अतिवाह्यते । कन्था (जीर्णवस्त्रम्) अपि शनैः सिध्यति । पर्वतलङ्घनम् शनैः भवति । विद्या अपि शनैः प्राप्यते । वित्तम् अपि शनैः वर्धते । एतानि पञ्चवस्तूनि शनैः शनैः भवन्ति ।

(बाटो बिस्तारै काटिन्छ । कन्था बिस्तारै बनाइन्छ । पहाड नाघ्ने काम बिस्तारै हुन्छ । त्यस्तै, विद्या प्राप्त गर्ने र धन कमाउने काम पनि अलि-अलि गरेर पूरा हुन्छ, अर्थात् यी ५ वटा काम गर्न हडबडाएर हैन, धैर्यसाथ प्रयत्न गर्नुपर्छ ।)

४. अन्वयः- शैले शैले माणिक्यम् न (भवति) । गजे गजे मौक्तिकम् न (भवति) । वने वने चन्दनं न (भवति) । (एवमेव) सर्वत्र साधवः नहि (भवन्ति) ।

अर्थः- शैले शैले रत्नम् न भवति, कुत्रचित् पर्वते एव तत् प्राप्यते । तथैव प्रत्येकम् गजे मौक्तिकम् न भवति । अथ च प्रत्येकम् वने चन्दनं न भवति । क्वचिद् एव चन्दनवृक्षः प्राप्यते । तथैव सर्वत्र स्थाने साधवः न भवन्ति । क्वचिद् एव ते दुर्लभतया प्राप्यन्ते ।

(हरेक पहाडमा रत्न हुँदैन । हरेक हात्तीमा मोती हुँदैन । त्यस्तै प्रत्येक जङ्गलमा श्रीखण्ड हुँदैन । यसै गरी जहाँसुकै पनि सज्जनहरू पाइँदैनन्, अर्थात् कहीं-कहीं मात्र मुस्किलले सज्जनसँग सम्पर्क हुन्छ ।)

शब्दार्थः

(१)

लघुचेतसाम् = छोटो बुद्धि भएकाहरूको वसुधा एव = पृथ्वी नै
निजः = आफ्नो कुटुम्बकम् = जहान, परिवार
परः = अर्को उदारचरितानाम् = विशालहृदय भएकाहरूको

(२)

इह = यस संसारमा, यहाँ क्रोधः = रिस
भूतिम् = ऐश्वर्य (लाई) आलस्यम् = अलसीपन

इच्छता = चाहनेले
दोषाः = दोषहरू
तन्द्रा = उँघाइ

दीर्घसूत्रता = जुम्सोपन
हातव्याः = छोड्नुपर्छ

(३)

शनैः बिस्तारै पर्वतलङ्घनम् = पहाड नाघ्ने काम
पन्थाः = बाटो वित्तम् = धन, सम्पत्ति ।
पञ्च = पाँच एतानि = यिनीहरू
कन्या = थोत्रो लुगा, थाङ्गनो

(कपडाका दुक्रैटुका गाँसेर तयार पारिने जोगीको भोली वा ओड्ने)

(४)

शैलः = पहाड साधवः = साधुहरू, सज्जनहरू
माणिक्यम् = रत्न, माणिक्य चन्दनम् = चन्दन, श्रीखण्ड
मौक्तिकम् = मोती

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥

२. शुद्धम् लिखत

शनैः पन्थाः शनैः कन्या शनैः पर्वतलङ्घनम् ।
शनैर्विद्या शनैर्वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः ॥

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न बने बने ॥

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) कीदृशानाम् जनानाम् कृते वसुधैव कुटुम्बकम् भवति ?

(उदा.- उदारचरितानाम् जनानाम् कृते वसुधैव कुटुम्बकम् भवति)

(ख) के षड् दोषाः ?

(ग) जनः कथम् विद्याम् प्राप्नोति ?

(घ) साधवः सर्वत्र भवन्ति न वा ?

(ङ) कानि वस्तूनि शनैः भवन्ति ?

५. अधोलिखितम् पद्यम् कण्ठस्थम् आबधत

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

६. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) शनैः पन्थाः शनैः शनैः पर्वतलङ्घनम् । (कन्था, पन्थाः, कथा)

(ख) निद्रा तन्द्रा भयं आलस्यं दीर्घसूत्रता । (अलसता, भीतता, क्रोधः)

(ग) शैले शैले न मौक्तिकं न गजे गजे । (चन्दनम्, माणिक्यम्, सौन्दर्यम्)

(घ) अयं निजः परो वेति गणना । (उदारचरितानाम्, लघुचेतसाम्, दृढचेतसाम्)

७. परस्परम् मेलयत

(क) शनैः शनैः भवन्ति

(क) मौक्तिकम् न भवति

(ख) षड्दोषाः हातव्याः

(ख) वसुधैव कुटुम्बकम्

(ग) उदारचरिताः जनाः

(ग) भूतिमिच्छता जनेन

किम् मानयन्ति

(घ) गजे गजे

(घ) पन्थाः, कन्था, पर्वतलङ्घनम् विद्या, वित्तम्

८. अधोनिर्दिष्टानाम् शब्दानाम् सन्धिविच्छेदं कुरुत

पुरुषेणेह, वसुधैव, पञ्चैतानि ।

९. अधोनिर्दिष्टान् शब्दान् वाक्येषु योजयत

अयम्, निद्रा, विद्या, गजः ।

१०. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

(क) विद्यार्थी पदछ ।

(ख) तिमी के गछौ ?

(ग) हामी पदछौ ।

(घ) साँचो बोल ।

विशेष अभ्यास

सन्धि र समास

१. धेरै पद मिली एउटै हुने प्रक्रियालाई समास भनिन्छ भने पहिलो पदको पछिल्लो वर्ण र पछिल्लो पदको पहिलो वर्ण मिल्न जाने स्थितिलाई सन्धि भनिन्छ । समासमा शब्दको अर्थ नै पनि कतै-कतै फेरिन्छ भने सन्धिमा अर्थ यथावत् रहन्छ । सन्धि- अच् सन्धि, हल् सन्धि र विसर्ग सन्धि समेत मुख्य तीन छन् भने समासका प्रमुख छ भेद छन्- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, कर्मधारय, बहुव्रीहि र द्विगु ।
२. पाठमा दिएका पद्यमा लघुचेतसाम्, उदारचरितानाम्, दीर्घसूत्रता, पर्वतलङ्घनम् यी शब्द समस्त हुन् ।
३. सन्धि भएका केही शब्द र तिनको विच्छेद अवस्था यसरी देखाइन्छ-

वसुधैव	वसुधा = एव	वृद्धि (ऐ)
पञ्चैतानि	पञ्च = एतानि	वृद्धि (ऐ)
शनैर्विद्या	शनैः = विद्या	विसर्ग (र)
शनैर्वित्तम्	शनैः = वित्तम्	विसर्ग (र)
वेति	वा = इति	गुण (ए)
पुरुषेणेह	पुरुषेण = इह	गुण (ए)

ऊनविंशः पाठः

नेपालस्य एकीकरणम्



नेपालदेशस्य एकीकरणम् अस्माकम् पूर्वजाः दुःखेन अकुर्वन् ।
श्री ५ पृथ्वीनारायणशाहः खण्डितरूपेण स्थितान् भूभागान् एकत्रीकृत्य अखण्डम्
नेपालम् अरचयत् । सः गोरखाप्रदेशस्य राजा आसीत् । खण्डितः नेपालः निर्बलः
भवति इति विचार्य सः सबलम् नेपालम् अकरोत् । ततः पूर्वम् पूर्वभागे पश्चिमभागे
च अनेकानि राज्यानि आसन् ।

पृथ्वीनारायणशाहः दूरदर्शी आसीत् । सः बहुकालम् यावत् युद्धम् अकरोत् । युद्धे
बहवः विघ्नाः आगच्छन् तथापि सः संघर्षम् कृत्वा लक्ष्यम् प्राप्तवान् ।

सः राष्ट्रहिताय बहून् उपायान् अवदत् । तस्य विचारे अयम् देशः एकम्
उद्धानम् अस्ति, सर्वे जनाः पुष्पाणि सन्ति । परस्परम् सहयोगेन देशस्य सौन्दर्यम्
वर्धते, समृद्धिः अपि भवति । स्वदेशस्य उन्नतिः स्वयम् एव कर्तव्या । उद्योगानाम्
सञ्चालनम् स्वयम् एव कर्तव्यम् । स्वकीया संस्कृतिः स्वयम् संरक्षणीया । देशः
स्वावलम्बी भवतु । स्वदेशे अर्जितम् धनम् विदेशे न प्रापणीयम् । उत्कोचस्य दाता
ग्रहीता च दण्डनीयौ । पृथ्वीनारायणस्य इमे विचाराः अद्यापि मार्गदर्शकाः सन्ति ।

नेपालस्य एकीकरणे आदिकवेः भानुभक्तस्य योगदानम् अपि बहुमूल्यम् अस्ति । भानुभक्तः आचार्यः काव्यमाध्यमेन जनान् एकसूत्रे आबद्धवान् । तेन नेपालीभाषायाम् लिखितम् रामायणम् अतीव लोकप्रियम् अस्ति ।

अन्ये अपि बहवः पूर्वजाः नेपालस्य समुत्थानाय प्रयत्नान् अकुर्वन् । तेषाम् प्रयत्नेन अधुना वयम् सर्वे मिलित्वा अत्र वसामः । अस्य देशस्य विकासाय स्वतन्त्रतायाः संरक्षणाय च वयम् अपि प्रयत्नम् कुर्मः ।

शब्दार्थाः

एकीकरणम्	= एकै पार्ने काम	स्वावलम्बी	= आत्मनिर्भर
पूर्वजाः	= पुर्खाहरू	अर्जितम्	= कमाएको
खण्डितरूपेण	= टुक्रा रूपले	न प्रापणीयम्	= पुन्याउनुहुन्न
स्थितान्	= रहेका	उत्कोचः	= घुस
भूभागान्	= भूभागहरूलाई	दाता	= दिने
एकत्रीकृत्य	= एकट्ठा पारेर	ग्रहीता	= लिने
अखण्डम्	= खण्ड नभएको	दण्डनीयौ	= दण्ड दिन लायक (दुई)
अरचयत्	= बनायो, बनाए	अद्यापि	= आज पनि
निर्बलः	= दुब्लो, कमजोर	तथापि	= तैपनि
विचार्य	= विचार गरेर	मार्गदर्शकाः	= बाटो देखाउने
सबलम्	= बलियो, दह्रो	काव्यमाध्यमेन	= काव्यका माध्यमले
अनेकानि	= धेरै	लोकप्रियम्	= दुनियाँको प्यारो
बहुकालम् यावत्	= धेरै समयसम्म	समुत्थानाय	= उन्नतिका लागि
युद्धम्	= लडाइँ	आबद्धवान्	= बाँध्यो, बाँधे
सौन्दर्यम्	= सुन्दरता	एकसूत्रे	= एक डोरोमा
समृद्धिः	= ऐश्वर्य	बहुमूल्यम्	= धेरै मूल्यको
वर्धते	= बढ्छ	इमे	= यी, यिनीहरू
स्वदेशस्य	= स्वदेशको	मिलित्वा	= मिलेर
उन्नतिः	= बढाइँ	दूरदर्शी	= पछिसम्मको कुरा देख्ने
अस्माकम्	= हाम्रो		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

एकीकरणम्, दूरदर्शी, समृद्धिः, उन्नतिः ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

एकत्रीकृत्य, संघर्षम्, अद्यापि, ग्रहीता ।

३. अर्थम् लिखत

पूर्वजाः, अखण्डम्, अर्जितम्, वर्धते ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) कः अखण्डम् नेपालम् अरचयत् ?

(उदाहरणम्- पृथ्वीनारायणशाहः अखण्डम् नेपालम् अरचयत् ।)

(ख) उत्कोचस्य विषये पृथ्वीनारायणस्य कीदृशः विचारः ?

(ग) भानुभक्तः किम् नाम काव्यम् अरचयत् ?

(घ) नेपालस्य एकीकरणे भानुभक्तः किम् योगदानम् अकरोत् ?

५. सन्धिबिच्छेदम् कुरुत

तथापि, वसुधैव, अद्यापि, क्रीडार्थम् ।

६. रिक्तस्थानम् पूरयत

(क) पृथ्वीनारायणशाहः राजा आसीत् । (पालपाप्रदेशस्य, मकवानपुरप्रदेशस्य, गोरखाप्रदेशस्य)

(ख) स्वकीया स्वयम् संरक्षणीया । (संस्कृतिः, प्रकृतिः, उन्नतिः)

(ग) पृथ्वीनारायणस्य विचारे देशः अस्ति । (गृहम्, उद्यानम्, मन्दिरम्)

(घ) भानुभक्तस्य लोकप्रियम् अस्ति । रामायणम्, महाभारतम्, पुराणम्)

७. पृथ्वीनारायणस्य विषये पञ्च वाक्यानि लिखत ।

८. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) पृथ्वीनारायणशाहः अखण्डम् नेपालम् अरचयत् ।

(ख) देशः एक उद्यानम् अस्ति ।

(ग) सर्वे जनाः अत्र खेलन्ति ।

(घ) सहयोगेन उन्नतिः भवति ।

विशेष अभ्यास

कृत् प्रत्यय-क्त्वा, ल्यप्

१. धातुबाट लाग्ने प्रत्ययहरूलाई कृत् प्रत्यय भनिन्छ । कृत् प्रत्यय लागी बनेका शब्दलाई कृदन्त शब्द भनिन्छ । कृदन्त शब्द नाम, विशेषण, अव्यय आदि समूहमा पर्दछन् । क्त, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तव्य, अनीयर् आदि प्रमुख कृत् प्रत्यय हुन् ।
२. पढेर, गएर, भएर आदि पूर्वक्रिया बुझाउँदा धातुबाट क्त्वा प्रत्यय हुन्छ । उपसर्ग लाग्दा वा अर्को अव्यय शब्द जोडिँदा ल्यप् प्रत्यय हुन्छ । क्त्वा प्रत्ययमा त्वा बाँकी रहन्छ भने ल्यप् मा य बाँकी रहन्छ । जस्तै- गम् = क्त्वा = गत्वा (गएर), पठ् = क्त्वा = पठित्वा (पढेर), खाद् = क्त्वा = खादित्वा (खाएर) भू = क्त्वा = भूत्वा (भएर) कृ = क्त्वा = कृत्वा (गरेर) इत्यादि । उपसर्ग लाग्दा- आ + गम् + ल्यप् = आगत्य, आगम्य (आएर), सम् + भू + ल्यप् = संभूय (भएर) प्र + नम् + ल्यप् = प्रणम्य (प्रणाम गरेर) इत्यादि ।

विंशः पाठः

भरतस्य वीरता

“भो शिशो तव दन्ताः कति सन्ति ? अहम् गणयामि । क्षणम् तिष्ठ ।” बालकः भरतः मधुरम् हसति । सः सिंहशिशुना सह खेलन् अस्ति ।

वनस्य मध्यभागे आश्रमः अस्ति । निकटे नदी बहति । वनपशवः यत्र-तत्र भ्रमन्ति । भरतः निर्भयः भूत्वा तैः सह खेलति । सः कदाचित् मृगबालकान् आश्रमम् आनयति । कदाचित् सिंहशिशून् स्वनिवासम् आनयति ।



“भो भरत ! अद्य वनम् न गच्छ । जलम् वर्षति । नदीप्रवाहः वर्धते । वने महद् भयम् भवति । सिंहाः, व्याघ्राः, भल्लुकाः, इत्यादयः पशवः भ्रमन्ति ।” भरतस्य माता शकुन्तला एवम् वदति, किन्तु भरतः तस्याः वचनम् न शृणोति ।

भरतः पञ्चवर्षीयः अस्ति । कदाचित् सः गभीरेषु नदीप्रवाहेषु प्रविशति, कदाचित् करे धनुः गृहीत्वा क्रीडार्थम् एकाकी वनम् गच्छति ।

शकुन्तला कठोरकार्यात् भरतम् निवारयति परन्तु भरतस्य हृदये भयम् एव नास्ति । सः शकुन्तलाम् वदति- “अहम् सिंहशिशुना सह खेलामि । भो मातः, मम चिन्ताम् न कुरु ।”

दुष्यन्तेन सह शकुन्तलायाः प्रेमविवाहः अभवत् । शापवशात् सः भार्याम् शकुन्तलाम् विस्मृतवान् । अतः शकुन्तला ऋषेः आश्रमे अवसत् । तत्रैव भरतः

अजायत । नृपस्य पुत्रः अस्ति । जात्या क्षत्रियः वर्तते । आश्रमे जन्म अभवत् । वने निवासः अभवत् । पशुभिः सम्पर्कः आसीत् । अतः बालकः भरतः स्वभावतः चपलः वीरश्च अभवत् ।

सः भरतः पश्चात् विपुलम् भूभागम् अशासत् । तस्यैव नाम्ना "भारतवर्षम्" इति प्रसिद्धिः अभवत् ।

शब्दार्थाः

शिशुः	= बच्चा	विपुलम्	= ठूलो
गणयामि	= गन्दछु	अशासत्	= शासन गर्यो, शासन गरे
दन्ताः	= दाँतहरू	चपलः	= चञ्चल, चकचके
क्षणम्	= एक छिन	नदीप्रवाहः	= नदीको वेग
सिंहशिशुना सह	= सिंहको बच्चा (डमरु) सँग	भल्लूकाः	= भालुहरू
खेलन्	= खेलै	व्याघ्राः	= बाघहरू
आश्रमः	= आश्रम	न शृणोति	= सुन्दैन
वनपशवः	= जङ्गली जनावरहरू	यत्र-तत्र	= जहाँतहीं
भ्रमन्ति	= घुम्दछन्	मधुरम्	= मीठो
निर्भयः	= डर नभएको	हृदये	= हृदयमा
पञ्चवर्षीयः	= पाँच वर्षको	नृपस्य	= राजाको
गभीरेषु	= गहिरा (सप्तमी)	जात्या	= जातिले, जन्मले
करे	= हातमा	नाम्ना	= नाउँले
क्रीडार्थम्	= खेल	स्वभावतः	= स्वभावैले
एकाकी	= एक्लो	कठोरकार्यात्	= कडा कामबाट
निवारयति	= रोक्छ, रोक्छे, रोक्छिन्	शापवशात्	= सरापका कारणले
विस्मृतवान्	= बिर्स्यो, बिर्सि		

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

सिंहशिशुना, दुष्यन्तः, आश्रमः, निवारयति ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

क्षत्रियः, प्रसिद्धिः, गृहीत्वा, नदीप्रवाहः ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

शिशुः, विपुलम्, भ्रमन्ति, चपलः, निर्भयः ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) भरतः केन सह खेलति ? (भरतः सिंहशिशुना सह खेलति ।)

(ख) आश्रमः कुत्र अस्ति ?

(ग) भरतस्य माता का अस्ति ?

(घ) कस्य नाम्ना "भारतवर्षम्" प्रसिद्धम् अभवत् ?

५. सन्धिविच्छेदम् कुरुत

इत्यादयः, क्रीडार्थम्, तत्रैव, तथापि ।

६. परस्परम् मेलयत

(क) वनपशवः (क) सिंहशिशुना सह खेलति ।

(ख) भरतस्य माता (ख) दुष्यन्तः

(ग) शकुन्तलायाः पतिः (ग) शकुन्तला

(घ) भरतः (घ) सिंहाः व्याघ्राः, भल्लूकाः ।

७. अधस्तनशब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

बालकः, अस्ति, गृहे, चपलः, त्वम्, खादसि, फलम्, सः ।

उदाहरणम्-

बालकः	चपलः	अस्ति

८. "भरतस्य वीरता" इति कथायाः सारम् लिखत ।

९. संस्कृते अनुवादम् कुरुत

(क) भरत चञ्चल छ ।

(ख) म दाँत गन्दछु ।

(ग) शकुन्तला आश्रममा छन् ।

(घ) पशुहरू वनमा घुम्दछन् ।

(ङ) चराहरू रूखमा बस्छन् ।

विशेष अभ्यास

कृत् प्रत्यय- शतृ, शानच्

१. कर्तृवाच्यमा वर्तमान कालमा परस्मैपदी धातुदेखि शतृ प्रत्यय र आत्मनेपदी धातुदेखि शानच् प्रत्यय हुन्छ । शतृ प्रत्ययमा धातुबाट अस्त जोडिन्छ र शानच् प्रत्ययमा आन् जोडिन्छ । यी प्रत्ययमा काम भइरहेको वा गरिरहेको भन्ने अर्थ बुझिन्छ । जस्तै गच्छत् = गइरहेको, भाषमाणम् = बोलिरहेको ।

शतृ र शानच् प्रत्यय लागेका केही शब्दहरू

शतृ (अत्)		शानच् (आन्)	
धातु (प्रकृति) -	प्रत्यय = रूप	धातु (प्रकृति) -	प्रत्यय = रूप
वस् + शतृ	= वसत्	भाष् + शानच्	= भाषमाण
कृ + शतृ	= कुर्वत्	सह + शानत्	= सहमान
स्था + शतृ	= तिष्ठत्	शङ्क + शानच्	= शङ्कमान
जीव + शतृ	= जीवत्	रम् + शानच्	= रममाण
खेल = शतृ	= खेलत्		

२. बुझ्नुपर्ने के छ भने शतृ वा शानच् प्रत्यय गरी बनेका खेलत्, वदत्, गच्छत्, भाषमाण, रममाण आदि शब्द विशेषणका रूपमा आउने हुँदा विशेषण अनुसार यिनका रूप सिद्ध हुन्छन् । जस्तै:-

शब्द	पुं	स्त्री	नपुं
खेलत्	खेलन्	खेलन्ती	खेलत्
गच्छत्	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
वदत्	वदन्	वदन्ती	वदत्
भाषमाण	भाषमाणः	भाषमाणा	भाषमाणम्
रममाण	रममाणः	रममाणा	रममाणम् इत्यादि ।

एकविंशः पाठः

विद्या-प्रशंसा

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥१॥

ज्ञातिभिर्वर्ण्यते नैव चोरेणापि न नीयते ।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम् ॥२॥

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥३॥

विद्या कल्पलतातुल्या यथेष्टफलदायिनी ।
स्वदेशेऽपि विदेशेऽपि नराणां मानवर्धिनी ॥४॥

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥५॥

शब्दार्थाः

शत्रुः	= शत्रु	चोरेण अपि	= चोरले पनि
वैरी	= शत्रु	न नीयते	= लगिदिन
बालः	= बालक	दानेन एव	= दानले नै
येन	= जसले	क्षयम्	= नाश
न पाठितः	= न पढाइएको, पढाइएन	न याति	= जाँदैन
सभामध्ये	= सभाका माझमा	रूपयौवनसम्पन्नाः	= रूप र यौवनले युक्त
हंसमध्ये	= हाँसका माझमा	विशालकुलसम्भवाः	= ठूलो कुलमा जन्मेका

बकः = बकुल्लो

नशोभते = सुहाउँदैन्

विद्यारत्नम् = विद्यारूपी रत्न

महाधनम् = ठूलो धन

ज्ञातिभिः = दाजु-भाइद्वारा

न वण्ट्यते = बाँडिदैन्

स्वदेशे = स्वदेशमा

विदेशे = अर्काको देशमा

नराणाम् = मानिसहरूको

मानवर्धिनी = मान बढाउने

वरम् = असल, बेस

विद्याहीनाः = विद्या नभएका

निर्गन्धाः = बास्ना नभएका

किंशुकाः = पलाँसका फूल

न शोभन्ते = सुहाउँदैन्

कल्पलतातुल्या = कल्पवृक्षजस्तो

यथेष्टफलदायिनी = चिताएको फल दिने

तमः = अन्धकार

हन्ति = नाश गर्छ

तारागण = ताराहरूको समूह

गुणी = गुण भएको

अपि, च = पनि

१. अन्वयः- येन बालः न पाठितः, (सः) पिता वैरी, माता शत्रुः (अस्ति) । हंसमध्ये बकः यथा सभामध्ये (सः) न शोभते ।

अर्थः- येन पित्रा मात्रा च बालकः न पाठितः, सः पिता बालकस्य शत्रुतुल्यः भवति, माता अपि शत्रुतुल्या भवति । अशिक्षितः बालः हंसमध्ये बक इव सभामध्ये न शोभते ।

(जसका बाबु-आमाले बालक पढाउँदैन् ती बाबु-आमा शत्रुजस्तै हुन् । किनभने नपढेको व्यक्ति हाँसका माझमा बकुल्लासरह सभामा शोभाहीन हुन्छ ।)

२. अन्वयः- विद्यारत्नम्, महाधनम्, ज्ञातिभिः, न वण्ट्यते एव, चोरेण, अपि, न नीयतेः, दानेन, एव, क्षयम् न याति ।

अर्थः- विद्यारूपम् महाधनम् बन्धुषु विभाजितम् न भवति । चोरेण अपि नेतुम् न शक्यते । दानेन अपि न नश्यति ।

(विद्यारूपी महान् धन दाजु-भाइहरूमा बाँडिदैन्, चोरले पनि चोर्न सक्तैन, दान दिएर पनि घट्दैन् ।)

३. अन्वयः- रूपयौवनसम्पन्नाः, विशालकुलसम्भवाः, विद्याहीनाः (जनाः), निर्गन्धाः, किंशुकाः, इव, न शोभन्ते ।

अर्थः- जनाः सौन्दर्ययुक्ताः, सन्ति, यौवनयुक्ताः सन्ति, उच्चकुले उत्पन्नाः

सन्ति, तथापि विद्याहीनाः ते निर्गन्धाः पलाशा इव न शोभन्ते ।

(रूप र यौवनले सम्पन्न र ठूलो कुलघरानमा जन्मेका भए पनि नपढेका मानिसहरू बास्ना नभएका पलासका फूल जस्तै शोभाहीन हुन्छन् ।)

४. अन्वयः- विद्या, कल्पलतातुल्या, यथेष्टफलदायिनी (भवति) । (सा) स्वदेशे अपि, विदेशे अपि नराणाम् मानवर्धिनी (अस्ति) ।

अर्थः- विद्या, कल्पलतातुल्या, यथेष्टफलदायिनी अस्ति । सा स्वदेशे विदेशे अपि नराणाम् सम्मानवर्धिनी अस्ति ।

(विद्या कल्पवृक्षजस्तो चिताएको फल दिने हुन्छ । स्वदेश र विदेशमा पनि विद्याले मानिसको समान बढाउँछ ।)

५. अन्वयः- एकः गुणी, पुत्रः वरम्, मूर्खशतानि अपि च न (वरम्) । एकः चन्द्रः तमः हन्ति, तारागणः अपि च (तमः) न (हन्ति) ।

अर्थः- एकः गुणी पुत्रः वरम् । मूर्खपुत्राः शतसंख्यकाः अपि न वरम् । यथा- एकः चन्द्रः अन्धकारम् नाशयति, परन्तु बहुः तारागणः अपि अन्धकारम् न नाशयति ।

(एउटा गुणी छोरो बरु बेस हुन्छ, सय जना मूर्ख छोरा हुनु बेस होइन । जस्तै एउटा (मात्र) चन्द्रमा अन्धकार नाश गर्छ, तर धेरै ताराहरू भएर पनि अध्यारो हटाउन सक्तैनन् ।)

अभ्यासः

१. अधस्तनम् पद्यम् सस्वरम् पठत

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।

न शोभन्ते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

२. अधस्तनम् पद्यम् अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत
ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव चोरेणापि न नीयते ।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम् ॥
३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत
वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥
४. रिक्तस्थानम् पूरयत
रूपयौवनसम्पन्ना ।
..... न शोभन्ते निर्गन्धा इव ॥
५. संक्षेपेण उत्तरयत
(क) कीदृशः पिता वैरी भवति ?
(यः पुत्रम् न पाठयति सः पिता वैरी भवति)
(ख) कीदृशः जनः हंसमध्ये बकः इव भवति ?
(ग) एकः चन्द्रः किम् करोति ?
(घ) नराणाम् मानवर्धिनी का अस्ति ?
६. परस्परम् मेलयत
(क) येन बालः न पाठितः (क) गुणी पुत्रः
(ख) चोरेण न नीयते (ख) न शोभन्ते
(ग) वरम् एकः (ग) विद्या
(घ) विद्याहीनाः (घ) सः पिता वैरी ।
७. विद्यायाः महत्त्वम् पञ्चसु वाक्येषु लिखत ।
८. अधोलिखितान् शब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत
शोभते, हन्ति, विद्या, माता, बालः ।
९. सन्धिविच्छेदम् कुरुत
शतान्यपि, वसुधैव, चोरेणापि, इत्यादयः ।
१०. संस्कृते अनुवादम् कुरुत
(क) विद्या ठूलो धन हो । (ख) हामी घर जान्छौं ।
(ग) तिमी साँचो बोल्छौ । (घ) रमा संस्कृत पढ्छे ।
(ङ) सिंह वनमा बस्छ ।

विशेष अभ्यास

प्रश्न

१. विभक्ति, वचन र लिङ्ग अनुसार रूप नफेरिई सधैं एकनास रहने शब्दलाई अव्यय शब्द भन्दछन् ।
२. केही प्रचलित अव्यय शब्द यस प्रकार छन्-
अपि, च, सदा, सर्वदा, तदा, कदा, तथा, यथा, किन्तु, परन्तु, तु, अत्र, यत्र, तत्र, कुत्र, नु, हि, आम्, सह, इव, एव, खलु, अधुना, एवम्, पुनः, चिरम्, अय, हे ।

द्वाविंशः पाठः

सङ्ख्या

१. एकः- ईश्वरः एकः अस्ति ।
२. द्वौ- पक्षौ द्वौ भवतः- शुक्लपक्षः कृष्णपक्षः च ।
३. त्रयः- त्रयः कालाः यथा-भूतकालः, वर्तमानकालः, भविष्यत्कालः च ।
४. चत्वारः- चत्वारः वेदाः, सन्ति । यथा-ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च ।
५. पञ्च- पञ्च तत्त्वानि प्रसिद्धानि-पृथ्वी, जलम्, तेजः, वायुः, आकाशम् च ।
६. षट्- षट् ऋतवः भवन्ति । यथा-वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद, हेमन्तः, शिशिरः च ।
७. सप्त- सप्त वारा यथा-रविवारः, सोमवारः, मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः च ।
८. अष्टौ- अष्टौ चिरञ्जीविनः प्रख्याताः सन्ति । यथा-अश्वत्थामा, बलिः, व्यासः, हनूमान्, विभीषणः, कृपः, परशुरामः, मार्कण्डेयः ।
९. नवः- ग्रहाः नव भवन्ति । यथा-सूर्यः, चन्द्रः, मङ्गलः, बुधः, बृहस्पतिः (गुरुः), शुक्रः, शनिः, राहुः, केतुः ।
१०. दश- दिशः दश भवन्ति । यथा-पूर्वा, पश्चिमा, उत्तरा, दक्षिणा, ईशानकोणः, अग्निकोणः, वायुकोणः, निर्ऋतिकोणः, ऊर्ध्वम्, अधः, च ।

दशाधिकाः सङ्ख्याशब्दाः

११. एकादश	१२. द्वादश	१३. त्रयोदश	१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश	१६. षोडश	१७. सप्तदश	१८. अष्टादश
१९. ऊनविंशतिः (एकोनविंशतिः, नवदश वा)			२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः	२२. द्वाविंशति	२३. त्रयोविंशतिः	२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः	२६. षट्विंशतिः	२७. सप्तविंशतिः	२८. अष्टविंशतिः
२९. ऊनत्रिंशत् (एकोनत्रिंशत्, नवविंशतिः वा)			३०. त्रिंशत् ।

शब्दार्थः

एकादश	= एघार (११)	पञ्चविंशतिः	= पच्चीस (२५)
द्वादश	= बाह्र (१२)	षड्विंशतिः	= छब्बीस (२६)
त्रयोदश	= तेह्र (१३)	सप्तविंशतिः	= सत्ताइस (२७)
चतुर्दश	= चौध (१४)	अष्टविंशतिः	= अट्ठाइस (२८)
पञ्चदश	= पन्ध्र (१५)	ऊनत्रिंशत्	= ऊनन्तीस (२९)
षोडश	= सोह्र (१६)	त्रिंशत्	= तीस (३०)
सप्तदश	= सत्र (१७)	वायुः	= हावा
अष्टादश	= अट्ठार (१८)	ऋतवः	= ऋतुहरू
ऊनविंशतिः	= उन्नाईस (१९)	चिरञ्जीविनः, चिरजीविनः	= धेरै लामो समयसम्म बाँच्ने, चिरञ्जीवीहरू
विंशतिः	= बीस (२०)	ऊर्ध्वम्	= माथि, उँभो
द्वाविंशतिः	= बाइस (२२)	अधः	= तल
त्रयोविंशतिः	= तेइस (२३)	चतुर्विंशतिः	= चौबीस (२४)

अभ्यासः

१. शुद्धम् उच्चारयत

ईश्वरः, द्वौ, शुक्लपक्षः, ग्रीष्मः ।

२. अभ्यासपुस्तिकायाम् सारयत

चिरञ्जीविनः, विभीषणः, कृष्णपक्षः, बृहस्पतिवारः ।

३. नेपालीभाषायाम् अर्थम् लिखत

द्वौ, एकोनविंशतिः, षोडश, त्रिंशत् ।

४. संस्कृते उत्तरयत

(क) वेदाः कति सन्ति ? नामानि लिखत ।

(वेदाः चत्वारः सन्ति । यथा ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च ।)

(ख) वाराः कति सन्ति ? नामानि लिखत ।

(ग) ऋतवः कति भवन्ति, तेषाम् नामानि लिखत ।

(घ) अष्टानाम् चिरञ्जीविनाम् नामानि लिखत ।

५. परस्परम् मेलयत

(क) ईश्वरः (क) नव

(ख) ऋतवः (ख) सप्त

(ग) वाराः (ग) एकः

(घ) ग्रहाः (घ) षट्

६. अधो सिखितान् सङ्ख्याशब्दान् प्रयुज्य वाक्यानि रचयत

पञ्च, द्वादश, सप्तदश, नव ।

७. नेपालीभाषायाम् अनुवादम् कुरुत

(क) विंशतिः छात्राः सन्ति । (ख) द्वादश मासाः भवन्ति ।

(ग) चन्द्रस्य षोडश कलाः भवन्ति । (घ) विद्या महाधनम् अस्ति ।

(ङ) चत्वारः जनाः पठन्ति ।

शब्दभण्डारः

अंशः	= भाग	अल्पम्	= थोरै
अङ्कः	= काख १,२ आदि सङ्ख्या	अल्पवृष्टिः	= कम पानी पर्नु
अङ्कुरः	= आँकुरा, टुसा	अवलोकनम्	= हेर्नु, हेराइ
अङ्कुरणम्	= आँकुरा निस्कनु, टुसा पलाउनु		
अवधारणा	= निश्चित धारणा, पक्का विचार		
अङ्गुष्ठः	= बूढीऔलो	अक्षतः, अक्षताः	= पूजामा प्रयोग गरिने पवित्र चामल
अजा	= बाखो	अक्षरम्	= क, ख आदि वर्ण
अञ्जलिः	= अँजुली	अक्षांशः	= भूमध्यरेखा र ध्रुवताराका माझको कोणिक दूरी
अतिवृष्टिः	= ज्यादा पानी पर्नु	आकर्षकम्	= आकर्षण गर्ने, खिच्ने
अतीव	= ज्यादा	आकर्षणम्	आफूतिर तान्नु, खिच्नु
अत्र	= यहाँ	आकर्षितम्	= आकर्षण गरिएको
अधिककोणः	= ९० डिग्रीभन्दा बढी र १८० डिग्रीभन्दा कमको कोण		
आकृतिः	= रूप, आकार	अध्ययनम्	= पढाइ
अनामिका	= साहिँलीऔला	आदरः	= सम्मान
अनुपातः	= तुलना, दँजाइ/गणितमा दुई अङ्क मापन	आदानम्	= लिनु, ग्रहण
	गर्दा लिने मात्रा वा भाग		
अनुरागः	= प्रेम, स्नेह	आधुनिकम्	= अहिलेको, वर्तमान
अनुसन्धानम्	= खोजी, आविष्कार		
आनुवंशिकम्	= वंशपरम्पराबाट आएको, पुख्यौली	अन्तः	= भित्र
आन्तरिक	= भित्रको	अन्तरिक्षम्	= आकाश
अन्धपरम्परा	= ठीक बेठीक नछुट्याई मान्दै आएको परम्परा	आपणः	= पसल
अन्धविश्वासः	= एकोहोरो विश्वास	आभूषणम्	= गहना
अपूपः	= मालपुवा	आमलकः, आमलकम्	= अमला

अभियानम्	= माथि चढ्नु, आरोहण/आक्रमण	आम्रः	= आँप
अभिवृद्धिः	= राम्ररी बढ्नु आयताकारः	= फराकिलो क्षेत्र, विशाल आकार	
अभिव्यञ्जकम्	= बताउने, बुझाउने आयातः	= बाहिरबाट आएको वा ल्याइएको	
		वस्तु/सो वस्तु ल्याउने काम	
अमावास्या	= औंसी आयोगः	= निश्चित कामका लागि गठन गरिएको समिति	
अर्चनम्, अर्चना	= पूजा	आयोजना	= बन्दोबस्त, प्रबन्ध
अर्थः	= धन/शब्दको मतलब या तात्पर्य	आयोजितम्	= आयोजना गरिएको
आसन्नकोणः	= ज्यामितिमा एक कोणसँग जोडिएको अर्को कोण		
आस्था	= श्रद्धा, विश्वास	इतिहासः	= बितेको घटना वा विवरण
इन्धनम्	= दाउरा/दाउराको बदला ताप पैदा गर्ने मट्टीतेल, पेट्रोल आदि साधन		
इक्षुः	= उखु	कदाचित्	= कहिलेकाहीँ
ईशः, ईश्वरः	= भगवान्, ईश्वर	कदापि	= कहिल्यै पनि
उच्चैः	= माथि	कनिष्ठः	= कान्छो
उत्खननम्	= जमिन खन्ने काम	कनिष्ठा	= कान्छी/कान्छी औंला
कनिष्ठिका	कान्छी औंला	उत्थानम्	= उठ्नु, उन्नति
उत्पत्तिः	= जन्म	कपोलः	= पारेवा
उदरम्	= पेट	करणम्	= साधन, औजार/तृतीया विभक्ति जनाउने एक कारक
उद्घोषणम्	= घोषणा गर्नु, भन्नु	कला	= सीप, दक्षता, कुशलता
उपत्यका	= पहाडको काखमा बसेको सम्म जमिन, ब्याँसी		
कविता	= छन्द वा लयमा लेखिएको साहित्यिक विधा, काव्य		
उपनयनम्	= व्रतबन्ध	काणः	= कानो
उपनेत्रम्	= चस्मा	काव्यम्	= छन्द वा लयमा आधारित साहित्यिक रचना
उपयोगः	= व्यवहार, प्रयोग	काष्ठम्	= काठ
उपरि	= माथि	काष्ठकार्यम्	= काठको काम
उपार्जनम्	= कमाइ	किन्तु	= तर
उल्लेखः	= लेखाइ	कीटः	= कीरो

उल्लेखनीयम् = उल्लेख गर्न सुहाउँदो कीटाणुः = रोग उत्पन्न गर्ने सूक्ष्म कीरा
 कीटनाशकम् = कीरा मार्ने (ओखती) कुचालकः = खराब चालक
 ऊर्ध्वपातनम् = तरल पदार्थलाई बाफ बनाई ऊँभोतिर हुत्थाउने वा फ्याँक्ने क्रिया
 कुचालकम् = विद्युत् र ताप सजिलै परिचालन हुन नसक्ने
 कच्छपः = कछुवा कुतः = कहाँबाट
 कञ्चुकः = माथिदेखि तलसम्म लगाउने लामो पहिरन, जामा
 कुलीनः = खानदान, घरानियाँ कटाहः = कराही कुत्र = कहाँ
 कटिः = कम्मर कृपणः = कन्जुस
 कथा = गद्यमा लेखिएको आख्यानोत्पन्न साहित्यिक विधा, कहानी
 कृष्णः = भगवान् कृष्ण कदा = कहिले गुल्फः = गोलिगाँठो
 कोणः = कुना/दुई दिशाबाट आएका सरल रेखा जोडिने ठाउँ
 गोधूमः = गहूँ गोलार्धम् = गोलो वस्तुको आधा भाग/बिचमा विषुवत् रेखाले छुट्याउँदा हुने भूगोलको आधा भाग
 कोशः, कोषः = खजाना, दुकुटी, भण्डार गौः = गाई
 कौशलम् = सीप क्रान्तिः = परिवर्तनका निम्ति गरिने संघर्ष, विद्रोह
 क्रान्तिकारी = क्रान्ति गर्ने, विद्रोही घटिका = घडी
 घण्टा = घण्ट/घण्टा घनः = बाक्लो/ बादल
 क्रोधः = रिस घनत्वम् = बाक्लोपन/लम्बाइ, चौडाइ, मोटाइ वा गहिराइको परिणाम
 खगः = चरो घनमण्डलम् = पृथ्वीको बनोटमा सबभन्दा भित्रपट्टिको भाग
 खण्डः = भाग, अंश घनिष्ठः = अत्यन्त दरो वा बलियो
 खण्डवृष्टिः = सबैतिर नपरी ठाउँ-ठाउँमा मात्र पानी पर्नु
 घर्षणम् = रगेड्ने वा घोट्ने काम कृष्णम् = कालो
 खण्डीकरणम् = खण्ड-खण्ड पार्नु, टुक्र्याउनु
 घाताङ्कः = गुणन गर्दा निस्केको सङ्ख्या, गुणनफल
 खट्वा = खाट घृतम् = घिउ

गजः	= हात्ती	चञ्चलः	= चकचके
गणः	= समूह, जमात	चञ्चलता	= चकचकेपन
गणतन्त्रम्	= निर्वाचित जनप्रतिनिधिरूपाट शासन चलाउने राजनीतिक व्यवस्था		
चतुरः	= चलाख	चतुरता	= चलाखी बढ्याई
गणितीयम्	= गणितको, गणितसम्बन्धी	चन्द्रकला	= चन्द्रमाको कला
गतिः	= हिँडाइ, बेग, चाल	चरणः	= गोडा
गलः	= गलो, घाँटी	चलराशिः	= शून्यदेखि अनन्तसम्म जति पनि मान हुन सक्ने राशि x, y, z य व र आदि
गलगण्डम्	= गलाको गाँड	चालकः	= चलाउने वा हाँक्ने ड्राइभर
गवाक्षः	= भयाल	चिकित्सा	= उपचार
गिरिः	= पहाड	चिबुकम्	= चिउँडो
गिरीशः	= पहाडको राजा (हिमालय वा शङ्कर)	चेतना	= होस
चोलकः	= चोलो	छायाङ्कनम्	= वस्तुको रूप वा आकार उतार्ने काम, फोटो खिच्ने काम
तिलः	= सानो गेडा हुने एक अन्न	जगत्	= संसार
जगदीशः, जगदीश्वरः	= जगत्का मालिक, ईश्वर	तुषारः	= तुसारो
जङ्घा	= जाँघ	तीर्थम्	= मन्दिर, घाट आदि पवित्र स्थान
जनकः	= बाबु/प्राचीन मिथिला क्षेत्रका एक राजा, जसको नार्जबाट जनकपुर प्रसिद्ध भयो		
तैलम्	= तेल	दधि	= दही
दीपः	= बत्ती	दीप्तम्	= बलेको/ चम्केको
जनगणना	= मानिसको गन्ती	दीर्घः	= लामो/उच्चारणमा धेरै समय लाग्ने स्वर
जनता	= मानिसहरूको समूह	दुग्धम्	= दूध
जन-शक्तिः	= जनताको क्षमता वा शक्ति	दुर्बलः	= दुब्लो
जनसङ्ख्या	= जनताको सङ्ख्या	देवरः	= देवर

जन्मभूमिः	= जन्मेको ठाउँ वा देश	
देशान्तरम्	= विदेश, परदेश / उत्तरी ध्रुवदेखि दक्षिणी ध्रुवसम्म तानिएको मध्येरेखादेखि पूर्व वा पश्चिमको दूरी वा अन्तर	
जलचरः	= पानीमा बस्ने जनावर	दैनिकम् = दिन-दिनको
जलमण्डलम्	= पृथ्वीभरिको पानीको भाग	द्वारम् = ढोका
जलवाष्पम्	= पानी बन्ने बाफ	धर्मशास्त्रम् = धर्मसम्बन्धी विवेचना गर्ने शास्त्र
जलीयम्	= पानीबाट बन्ने, जलसम्बन्धी	धान्यम् = धान
जीरकः, जीरकम्	= जिरा	धूपः = धूप
जीविकोपार्जनम्	= जीविका चलाउन गरिने काम वा कमाइ	
तडागः	= तलाउ	धौतम् = धोती
तपस्या	= साधना, उपासना, तप	ध्वंसः = नाश
तर्कशास्त्रम्	= तर्कसम्बन्धी नियमको विवेचना गरिएको शास्त्र	
ध्वजः	= ध्वजा, झन्डा	तर्जनी = चोर औंला
ध्वनिः	= शब्द, आवाज / ध्वनिलाई आत्मा मान्ने साहित्यिक मान्यता	
ताम्रपत्रम्	= अक्षर कुँदिएको तामाको पातो	
तालिका	= विषय, मिति आदि मिलाई तयार गरिएको सूची, रुटिन	
नखः	= नङ	परमाणुः = अति सूक्ष्म कण वा तत्त्व
नमस्कारः	= अभिवादन, नमस्कार	परलोकः = अर्को लोक, स्वर्ग
नवीनम्	= नयाँ	परश्वः = पर्सि
नारी	= स्त्री, आइमाई	परारि = परार
नासिका	= नाक	परावर्तनम् = फर्कने वा फर्काउने काम / साटफेर / ऐनामा परेको प्रकाश फर्कने क्रिया
निःशुल्कम्	= बिना शुल्क / शुल्क नलाग्ने	परिचयः = चिनारी
निकुञ्जः, निकुञ्जम्	= लहरा, -बुटाहरूको झुड भएकको ठाउँ	
परिमितिः	= परिमाण, नाप	निगमः = वेद / संस्थान
परिभाषा	= ठोस चिनारी, लक्षण निरन्तरम्	= लगातार

परिचारकः	= सेवक, नोकर	निमन्त्रणम्, निमन्त्रणा	= निम्ता
परिचारिका	= सेविका, नोकरी	निरर्थकम्	= बेकारको, व्यर्थ
परिवारः	= जहान	निर्वासनम्	= देशनिकाला
परियोजना	= कार्य सम्पन्न गर्न बनाइएको योजना, प्रोजेक्ट		
निर्यातम्	= निकासी, निकासी गरिएको	पवित्रम्	= चोखो
निर्मलम्	= सफा	पश्चात्	= पछि
निष्कासनम्	= निकाल्नु	पशुपालनम्	= जनावर पाल्ने काम वा व्यवसाय
निष्कासितम्	= निकालिएको	पाकशिक्षा	= पकाउन सिकाउने विद्या, पाकशास्त्र
निवेदनपत्रम्	= निवेदन गरी लेखिएको पत्र	पाठ-योजना	= पाठको योजना
निःसहायः	= सहायता गर्ने कोही नभएको	पारदर्शकम्	= छर्लङ्ग देखिने
नीचैः	= तल	पालनम्, पालना	= रक्षा
नूतनम्	= नयाँ	पाक्षिकम्	= पक्षको
नैवेद्यम्	= पूजाको प्रसाद	पित्तलम्	= पितल
न्यायालयः	= अदालत	पीतम्	= पहेंलो
पक्वम्	= पाकेको	पुरुषः	= लोर्नेमान्छे, पुरुष
पदार्थः	= पदको अर्थ/देख्न, बुझ्न सकिने रूप, आकार भएको वस्तु		
पञ्चमी	= पाचौँ तिथि	पुस्तकालयः	= पुस्तक सङ्कलन गरी राख्ने घर वा ठाउँ
परन्तु	= तर	पूगः	= सुपारी
परम्परा	= नियमित सिलसिला, क्रम, प्रणाली		
पूर्वाधारः	= योजना वा काम चाल्नुभन्दा पहिले चाहिने मुख्य आधार		
पूर्णमा	= पूर्णचन्द्र हुने तिथि		
भौतिकम्	= पाँच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, तेज, वायु र आकाश यी ५ तत्त्वबाट बनेको वा त्यससँग सम्बन्धित		
पृथक्	= भिन्नै, अलग	भ्राता	= दाजु वा भाइ
बधिरः	= बहिरो	भ्रूणम्	= पेटको बच्चा, गर्भ
बन्धुः	= नातेदार	भक्षिका	= भिँगा

बहिः	= बाहिर	मञ्चः	= मेच
बहिष्कृतम्	= बहिष्कार गरिएको	मध्यमा	= माझीऔला
बहुभुजः	= चारभन्दा बढी रेखाले घेरिएको समतलीय चित्र		
बहुमूल्यम्	= धेरै मोल पर्ने	मनःस्थितिः	= मनको अवस्था
बाध्यता	= लाचारी, विवशता	मयूरः	= मुजुर
बाह्यम्	= बाहिरको	मशकः	= मच्छड, लामखुट्टे
ब्रह्माण्डम्	= पृथ्वी, आकाश आदि सम्पूर्णले युक्त संसार		
भक्तम्	= भात	मर्यादा	= सीमा हद/आचरण, नियम
भक्तः	= भक्ति गर्ने व्यक्ति	महत्तमः	= सबभन्दा ठूलो
भक्तिः	= ईश्वर वा मान्यजन प्रतिको आस्था, सेवा		
महाप्रबन्धकः	= संस्थानको प्रबन्ध मिलाउने मुख्य व्यक्ति जनरल म्यानेजर		
भग्नावशेषः	= भत्की बिग्री बाँकी रहेको अंश		
मत्स्यपालनम्	= माछा पाल्ने काम वा व्यवसाय		
भयभीतः	= डरले पीडित	मांसम्	= मासु
भागिनेयः	= भानिज	मानाङ्कः	= मानदेवले चलाएको टक वा मुद्रा
भाण्डम्	= भाँडो	मान्यता	= संमान/स्वीकृति
भानूदयः	= सूर्यको उदय	मुद्रकः	= छाप्ने, मुद्रण गर्ने
भावना	= विचार, कल्पना	मुद्रणम्	= छपाइ
भूकम्पः	= भुइँचालो	मूलम्	= जरो
भूतलम्	= पृथ्वी, धरातल	मेघावी	= प्रतिभाशाली
भूपतिः	= राजा	मौलिकम्	= मूलसँग सम्बन्धित अरुको आड नलिई आफैँमा अडिएको
भूपरिवेष्टितम्	= जमीनले घेरिएको	यवः	= जौ
भूमिः	= जमीन	भूक्षयः	= भूमिको क्षय हुनु, पहिरो जानु
यापनम्	= बिताउनु	लघुतमः	= सबभन्दा सानो
युक्तिः	= उपाय, जुक्ति	लक्षणम्	= चिन्ह, लक्षण

योजना	= बन्दोबस्त, तयारी	लवणम्	= नून
योजनाबद्धम्	= योजनामा आधारित	लेखनी	= कलम
यौगिकम्	= दुई वा दुई भन्दा बढी मिलेर बनेको	लौहम्	= फलाम
रक्तम्	= रगत/रातो (रङ्ग)	वशः	= कुल
रक्तसावः	= रोग वा चोटपटकले शरीरबाट रगत बग्नु		
वंशानुगतम्	= वंशपरम्परादेखि आएको, पुख्र्यौली		
रचना	= बनाउने काम, निर्माण	वञ्चकः	= ठग, धूर्त
रजकः	= घोडी	बधूः	= दुलही
रजतम्	= चाँदी	वरः	= दुलाहा
रसना	= जिब्रो	वर्णनम्	= बयान
रसायनम्	= धातु गालेर भस्म पार्ने वा एक धातुबाट अर्कोमा परिणत गर्ने विज्ञान		
राजनीतिः	= राज्यको शासनप्रणाली वा नीति	वर्णनात्मकम्	= वर्णन भएको
राजनीतिज्ञः	= राजनीतिमा सिपालु	वायुः	= हावा, बतास
राजमार्गः	= मूल सडक	वायुमण्डलम्	= आकाश/वातावरण
राज्याभिषेकः	= नयाँ राजा गद्दीमा बस्दा गरिने अभिषेक		
वाष्पीकरणम्	= तरल पदार्थलाई बाफमा परिणत गर्ने काम		
रात्रिः, रात्री	= राती	वार्षिकम्	= वर्ष दिनको
राष्ट्रम्	= राष्ट्र, राज्य	विकृतिः	= विकार
राष्ट्रियम्	= राष्ट्रको	विजयः	= जित
रूपान्तरम्	= अर्को रूप/ एक रूपबाट अर्कोमा लैजाने काम, अनुवाद		
रोगः	= रोग, बिमारी		
विद्युत्	= बिजुली	विनाशः	= बिगार, बरबादी
विकेन्द्रीकरणम्	= स्थानीय तहसम्म अधिकार पुऱ्याउने काम		
विरक्तः	= संसारबाट मोह टुटेको		
विजातीयम्	= अर्कै जातको, फरक वर्गको		
विनिमयः	= अदलाबदली, हेरफेर	श्वः	= भोलि

विश्वः = संसार/सम्पूर्ण श्वासः = सास
 विश्वयुद्धम् = संसारका धेरै मुलुकको संलग्नतामा हुने लडाइँ श्वेतम् = सेतो
 विषुवतरेखा = उत्तरी र दक्षिणी ध्रुवका बीचमा पूर्वबाट पश्चिम गएको भनी
 कल्पना गरिएको रेखा, विषुवतरेखा
 वृद्धिः = बढ्नु/व्याकरणमा आ-ऐ-ओ यी तीन अक्षर षड्यन्त्रम् = जालभेल
 व्यक्तित्वम् = व्यक्तिको गुण वा विशेषता
 संस्कारः = सुधार/१६ वटा धार्मिक संस्कार
 व्यञ्जनम् = तरकारी, अचार आदिको परिकार संस्कृतिः = परम्परा, रीतिरिवाज
 व्यतीतम् = बितेको संस्था = संगठित समुदाय वा निकाय
 व्यवहारः = चालचलन (प्रयोग) काम सङ्कलनम् = सँगालो
 शङ्खः = शङ्ख सङ्ग्रहालयः = महत्त्वपूर्ण वस्तु संग्रह गरी राखिने ठाउँ वा घर
 शयनम् = ओछ्यान/सुताइ सङ्घः = समूह
 शाखा = हाँगो सङ्घर्षः = टक्कर, विद्रोह, प्रतिस्पर्धा
 शाटिका, शाटी = सारी सञ्चारः = हिँडाइ, गति/ खबर, सूचना ओसारपसार
 शाब्दिकम् = शब्दको, शब्दसम्बन्धी/मौखिक
 सजातीयः = एकै जातको, एकै वर्गको
 शिखरम् = चुचुरो सदा, सर्वदा = सधैं
 शिष्यः = चेलो सद्भावना = असल भवना
 शिलापत्रम्, शिलालेखः = शिला (ढुंगा) मा कुँदिएको अक्षर वा लेखोट
 शुकः = सुगा सन्ध्या = साँझ
 शुभ-कामना = भलो चाहना समकोणः = रेखागणितमा ९० अंशको कोण
 शृङ्खला = साइलो/लहर समानता = बराबरी
 समानुपातः = एकनासको औसत
 समीकरणम् = ज्ञात राशिका सहायताले अज्ञात राशि निकाल्ने गणितको प्रक्रिया
 समीपम् = नजिक समुदायः = समूह
 सम्पत्तिः = धन-दौलत सम्पादकः = किताब, पत्रपत्रिकाका लेख सम्पादन गर्ने व्यक्ति

साङ्केतिकम् = संकेत प्रयोग गरिएको, संकेतात्मक साधनम् = औजार, उपकरण
 साप्ताहिकम् = सप्ताहको, सातदिने सामन्तः = रजौटे
 सामर्थ्यम् = क्षमता, शक्ति सिन्दूरम् = सिंदुर
 सुचालकम् = बिद्युत् तरङ्ग प्रवाहित नहुने
 सुन्दरम् = राम्रो, तापमात्र सन्ने अभ्रक आदिबस्त' सुवर्णम् = सुन
 सूक्ष्मम् = मसिनो, गुप्त सेना = पल्टन, फौज
 स्तनः = धुन स्तुतिः = प्रार्थना, स्तुति
 स्थलम् = भुईं, जमिन, ठाउँ स्थलमार्गः = जमिनको बाटो, भूमार्ग
 स्थलमण्डलम् = पृथ्वीको सपूर्ण खंडिलो भूभाग स्थलीयम् = स्थलसम्बन्धी, स्थलको
 स्थितिः = अवस्था/बसाइ स्वाभिमानः = आफ्नो प्रतिष्ठामा हुने अभिमान वा गौरव
 हरितम् = हरियो हीरकम् = हीरा
 ह्रस्वः = छोटो/थोरै समयमा उच्चरण गरिने स्वर क्षतिः = नाश, क्षती
 त्रिकोणः = तीन सरलरेखाबाट बनेको समतल चित्र, त्रिभुज त्रिभुजः = त्रिकोण







